# अनुभूतियाँ : लघु कहानी संग्रह

ऊषा श्यामलाल

MPASVO
M. PUBLICATION

MPASVO
M.PUBLICATION
मनीषा प्रकाशन एवं शोध विवेक संस्था ,बी 32/16 ए -फ्लैट 2/1 गोपाल कुञ्ज नरिया,लंका, वाराणसी

मनीषा प्रकाशन एवं शोध विवेक संस्था की स्थापना का उद्देश्य विद्वानों द्वारा लिखित पुस्तकों, अप्रकाशित शोधों, मौलिक कृतियों, कहानियों, उपन्यासों, पाठ्यपुस्तकों, पाण्डुलिपियों का प्रकाशन, साथ ही शोध के नवीन बिन्दुओं का अध्ययन करना है। मनीषा प्रकाशन द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका " आन्वीक्षिकी " का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

कार्यालय : वाराणसी, जौनपुर, इलाहाबाद
MPASVO अर्थात् मनीषा प्रकाशन एवं शोध विवेक संस्था। यह प्रकाशन एवं शोध के लिए स्थापित पंजीकृत, भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त स्ववित्तपोषित संस्था है। इसकी पंजीकरण पत्रावली संख्या V-34654,रजि. 533/2007-2008 है।

© ऊषा श्यामलाल
प्रथम संस्करण 2010, मूल्य : 200/-मात्र

सर्वाधिकार सुरक्षित
इस पुस्तक के अन्तर्गत सभी अधिकार लेखक के अधीन हैं। इस पुस्तक के किसी भी भाग को किसी भी रूप में प्रयोग करना, फोटोकॉपी करना अथवा किसी भी जानकारी को बिना सन्दर्भ दिये प्रयोग करना दण्डनीय होगा। प्रस्तुत पुस्तक के अन्तर्गत किया गया शोध लेखक का व्यक्तिगत अध्ययन एवं दृष्टिकोण है, प्रकाशक प्रस्तुत पुस्तक के किसी भी तथ्य अथवा संवाद के लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार नहीं है।

International Standard Book Number
ISBN-13 : 978-81-908511-9-0
ISBN-10 : 8190851190

टंकण : एडोब पेजमेकर,ए.पी.एस.प्रियंका रोमन 14 /16.8
पुस्तक संयोजन : महेश्वर शुक्ल

भारत में मुद्रण
मनीषा प्रकाशन एवं शोध विवेक संस्था
बी 32/16 ए -फ्लैट 2/1 गोपाल कुञ्ज नरिया,लंका, वाराणसी
सम्पर्क : मो. 9935784387

यह पुस्तिका उन तमाम नारियों को समर्पित है जो जीवन के संघर्ष में एक ‘नई सुबह’ का आह्वान कर रही हैं।

# अनुक्रमणिका


**प्राक्कथन** i-i

1. रूप की राशि 1-5
2. मानवी 6-8
3. नग़मा 9-12
4. अम्मा का आँगन 13-15
5. वात्याचक्र 16-17
6. पोटली 18-19
7. लाटरी 20-38

# प्राक्कथन

जीवन के इर्द गिर्द अनेकों घटनायें घटती रहती हैं। परन्तु कुछ एक ने मेरे मन को गहराई से छू लिया है, और उन्हीं घटनाओं को शब्दों का रूप देने के लिए बार-बार इच्छा होती थी, उन्हीं सब घटनाओं को कहानी के रूप में लिखने की प्रेरणा मेरे चारों बच्चों [पुत्र मनोज, पुत्री मोना, पुत्री ऋतु व पुत्री शैली] ने दिया जो आज आपके समक्ष प्रस्तुत है। मैं अपने बच्चों के प्रति आभारी हूँ।

# रूप की राशि

ओफ्फो ऽ पता नहीं कौन है जो इतनी देर से काल बेल बजा रहा है और पता नहीं कैसे हैं डॉ. अनन्त लोग जो कि दरवाजा नहीं खोल रहे हैं मेरी तो नींद ही ऊचट गयी इस भीषण गर्मी में कूलर चल रहा है तब भी बेल की आवाज कानों को बेध रही है। धन्नों को, धन्नों जरा जाकर देख आओ नीचे यदि कोई मरीज होगा तो बैठने को बोल देना, बता देना कि पाँच बजे से मरीज देखते हैं, डॉक्टर अनन्त इस भरी दोपहरी में बेल न बजायें। जी बहूजी अभी जाती हूँ। जैसे ही मैं लेटी कि फिर बेल बजने लगी........हो गया, लगता है धन्नों नीचे नहीं गई, शायद सो गई, जरा देखूँ तो बात क्या है, अब मैं ही नीचे जाकर देख आती हूँ। यह कम्बख़्त धन्नों तो मुझ से भी बढ़कर है। लाट साहब फिर सो गई हैं। नीचे डॉ. अनन्त के घर का गेट खोलकर दरवाजे पर मिसेज अनन्त को देखकर ठिठक गई अरे ! राशि इतनी देर से तुम्हीं बेल बजाये जा रही हो। क्यों क्या बात है ? मैं तो समझी कि कोई मरीज होगा जो बेल पर ऊँगली रख कर खड़ा है। खैर क्या बात है इतनी तेज धूप में तुम प्रसून को लेकर कहाँ गई थी ? कोई घर में नहीं है क्या जो दरवाजा नहीं खोल रहा है ?

अरे दीदी घर में माँ जी हैं, चाचा जी हैं और अनन्त भी थे जब मैं बाजार गई थी। पर अब हैं कि नहीं यह नहीं मालुम है। ऐसी भी क्या जरूरत पड़ गई जो भरी दोपहरी में बच्चें को लेकर बाजार गई थी ? थोड़ी

धूप कम हो जाती तब जाती। बस दीदी बहुत जरूरत थी तभी हारकर मैं आज गई। प्रसून का डिब्बे का दूध खत्म हो गया था, वह क्या पीता ? अच्छा चलो मेरे घर बैठो थोड़ी देर और। प्रसून भी तो सो गया है, उसको लिटा दो और तुम भी पानी पी लो, मुँह भी सूख गया है चलो। आओ वेड रूम में आ जाओ। ये तो हैं नहीं, इमरजेंसी आ गई थी अतएव चले गये हैं, आओ चली आओ। बच्चें हैं, सो रहे हैं प्रसून को लिटा दो और तुम भी लेटकर आराम कर लो। पहले कुछ खाकर पानी पियो। अरे नहीं दीदी खाना तो खाकर गई थी कुछ खाऊँगी नहीं केवल पानी पिऊँगी। अच्छा पानी ही पी लो और आराम कर लो। लेटूँगी नहीं क्योंकि यदि आँख लग गई और सो गई तो नीचे घर में महाभारत हो जायेगा। ऐसी क्या बात है राशि क्यों महाभारत हो जायेगा ऊपर ही मेरे घर में ही तो हो कहीं दूर भी तो नहीं है।

दीदी क्या बताऊँ मेरी सासू जी स्वयं बहुत चरित्रवान बनती हैं और मुझे चरित्रहीन कहती हैं। चाचा जी के साथ .......कूलर खोल कर तभी तो जान बूझ कर दरवाजा नहीं खोल रहीं हैं और अनन्त कहाँ चले गये होंगे। तब भी उनके आँखों पर पट्टी बंधी रहती है, ऐसा बनते हैं कि जैसे कुछ जानते ही नहीं हैं। मैंने कहा भी कि माँ जी चाचा जी के साथ ऐसे रहती हैं जैसे पति पत्नी रहते हैं तो इतना सुनते ही मेरे गाल पर एक जोर का थप्पड़ पड़ गया और......की उपाधि से विभूषित भी हो गई। माँ-बेटे दोनों को मेरी बद्तमीजी ज्यादा दिखाई पड़ती है। अपने लोग बहुत ही सज्जन व चरित्रवान बनते हैं। वही हाल है सत्तर चूहे खाकर बिल्ली हज करने चली। राशि तुम तो बहुत ज्यादे गुस्से में हो गई। थोड़ी ठंडी हो जाओ, तब बताना। नहीं दीदी ठंडी क्या होऊँ आज मेरा जी जल गया है इन लोगों से। आज दो दिन से अनन्त से कह रही हूँ कि प्रसून के लिए दूध का डिब्बा ला दो, अब खत्म होने वाला है, पर उनके कान पर जूँ भी नहीं रेंग रही है। आज बिलकुल समाप्त हो गया है, आज क्या पिलाती ? भूखा ही है एक फीड उसको नहीं दे पाई। बोतल में पानी भर कर उसमें शक्कर मिला कर पिला दिया है और बार-बार रूपये मांग रही थी लेकिन अनन्त कहते क्या हैं तुम्हारा खर्चा ज्यादे है, मुझसे नहीं उठाया जायेगा। मेरा जी जल गया। मैंने भी सुना दिया कि मैं तो अच्छाखासा लखनऊ के कान्वेन्ट स्कूल में पढ़ा रही थी, तुम्हीं ने प्यार मोहब्बत के स्वॉग रचकर मेरी नौकरी छुड़वा

दिया, तब तुमने नहीं सोचा था कि मेरा खर्चा कैसे उठाओगे ? तब तो तुम मेरे कदमों में अपनी पूरी जिन्दगी न्योछावर कर रहे थे। मैं तो तुमसे शादी नहीं करना चाहती थी क्योंकि कई लोगों ने मुझे बताया कि तुम अपनी पहली पत्नी जो कि डॉक्टर थी उसकी हत्या कर चुके हो, पर मेरी मति मारी गई थी जो कि तुम्हें एक भोला भाला अच्छा इन्सान समझने लगी थी। मैं सोचती थी कि दुनियाँ बिना जाने बूझे हर किसी को गलत ही समझ लेती है। पर सत्य था, गलत कुछ भी नहीं था। तुम्हारे व्यवहार ने इसको भी सत्य कर दिया है। अब ज्यादे मत बोलो। रूपये दो, मुझे अपने लिये अण्डरगारमेन्ट्स भी लेने है और सेनेटरी नैपकिन्स लेना है। जानती हो दीदी अनन्त ने पाँच सौ रूपये मेरे मुँह पर फेंक दिया और बोले कि अब तुम मेरे घर में कदम मत रखना। जाओ निकल जाओ। अपने बच्चे को भी ले जाओ मुझे नहीं चाहिए इस पाप की गठरी को मैं क्यों ढोऊँ ? पता नहीं कहाँ कहाँ जाती हो, इधर उधर के बच्चे को जन्म देकर मेरा बच्चा बतलाती है। यह बात सुनते ही मेरे तनवदन में आग लग गई। मैं जी खोलकर खूब बोली- अनन्त तुम अपने कुकर्मों को मेरे ऊपर डाल रहे हो ? रात रात भर सुरा और सुन्दरी के बीच तो तुम पड़े रहते हो, सारी रात तुम्हारा खाना टेबुल पर लगाकर जागकर प्रतीक्षा करती रहती हूँ। पूछने पर कहते हो कि इमरजेंसी थी, क्यों इतना पूछती हो ? इतने में माँ जी क्या कहती हैं पता नहीं तुम जागकर प्रतीक्षा करती हो कि तुम भी कहीं चली जाती हो क्योंकि मुझे तुम्हारे जागने की कोई भी आहट नहीं मिलती है। अरे तुम्हारी सास है कि दुश्मन जो कि इतना कटु वचन बोलती हैं। दीदी फिर आज मैंने माँ जी से कह दिया कि आप कौन होती हैं पति पत्नी के बीच बोलने वाली ? आप तो स्वयं आठ बजे शाम से ही खाना खाकर चाचा जी को खिलाकर अपने बेडरुम में दरवाजा बंद करके सो जाती हैं तो आप क्या जानेंगी मेरी आहट। आप सास व माँ दोनों ही नहीं है, जो आप मेरे वारे में सोचेंगी। आप तो माँ जी बस अपनी वासनाओं की पूर्ति में लगी रहती हैं। रात दिन आपको अपने से फुरसत ही नहीं जो कि बेटा बहू के बारे में जाने, फिर कैसे आहट पता चलेगी आपको। सूप बोले तो बोले चलनी क्या बोले जिसमें बहत्तर छेद। इतना कह कर मैं प्रसून को लेकर बाहर निकल आई और पास के बाजार से सब सामान लेकर एक घण्टें में वापस आ गई हूँ तो अब दरवाजा न खोलकर मुझसे बदला लिया जा रहा है। यही सब कारण है। राशि इसलिए तुम डॉ. अनन्त के

साथ कही भी पार्टी में दिखाई नही देती हो। अब जब मुझे पता ही नही होगा और मुझे चलने के लिये नहीं कहेंगे तब मैं क्या जानूँ ? हाँ यह जरूर मालूम है कि अनन्त के संबंध नर्सों से भी है और एक दो डाक्टरनियों से भी है, नाम नहीं मालुम है जब से माँ जी आई है रहने तभी से। दीदी जरा घड़ी देखिये। अरे ! हाँ पाँच बज रहे हैं। प्रसून भी खूब सो रहा है। अच्छा दीदी अब चलती हूँ। नीचे देखिये क्या क्या बीतता है मेरे ऊपर। अब तो बस मैंने सोच लिया है कि अब और ज्यादे बरदाश्त नहीं करूँगी। अब चंडीगढ़ चली जाऊँगी। पर क्या करूँ मेरे अचानक पहुँचने से और पूरी बात जान लेने से पापा को दूसरा अटैक न पड़ जाय। यही सब बातें सोचती रहती हूँ। लेकिन अब नौकरी अवश्य करूँगी। बहुत प्यार मुहब्बत हो गया है। जो इंसान पहली पत्नी की हत्या कर सकता है, वह दूसरी की भी कर सकता है। इस घर में तो माँ-बेटा-चाचा सभी जानवर बन गये हैं जो कि अपनी अपनी वासनाओं की पूर्ति में लगे हैं। किसी को किसी के बारे में कोई रूचि नहीं है। यही होता है बिना सोचे समझे अनन्त जैसे व्यक्ति से शादी करने का परिणाम। चलो राशि तुम्हें नीचे तक छोड़ आऊँ। यदि कोई अनहोनी घटना घटे तो तुम आ जाना मेरे यहाँ। अनहोनी या होनी क्या होगी दीदी या तो रहूँगी या फिर चली जाऊँगी। आज काफी दिन हो गया राशि दिखाई नहीं पड़ी। नीचे उतरकर मैं टहल रही थी मैंने पूछा कि साबित्री बहू जी घर में हैं ? नहीं बहू जी, माँ जी बताती हैं कि बहू जी चंडीगढ़ गई है मायके, उनके पिता जी की तबीयत खराब है, तार आया था। मैं तो सब बातें समझ गई थी कि राशि को चंडीगढ़ जाने के लिये मजबूर कर दिया होगा इन दोनों माँ बेटों ने। बेचारी राशि इतनी पढ़ी लिखी समझदार सज्जनता की प्रतिमूर्ति जितनी गुणवान उतनी ही रूपवान। विधाता भी क्या सृष्टि रचते हैं, राशि को बेहद सुन्दर और गुणों से सम्पन्न बनाया परन्तु भाग्य कैसा दिया उसको। राशि जैसी साहसी लड़की अपना भाग्य स्वयं बनाती है। बस चूक हो गई उससे कि वह अनन्त को समझ न पाई, वह ...अनन्त को एक सज्जन डाक्टर व नेक इंसान समझती थी। जो कि पत्नी की मृत्यु से टूट गया था और वह अनन्त की पत्नी बनकर उसके दु:ख को दूर करना चाहती थी, पर हुआ इसके विपरीत। माँ जी के आने पर कुछ दिन तो ठीक ठीक चला पर माँ जी को अपनी स्वतंत्रता और स्वेच्छाचार में राशि बाधक लगने लगी और वह एक न एक बहाना बनाकर अनंत का कान भरने

लगीं और अनन्त ने पूरी बात समझने के बजाय उसे शशि में ही सारी गल्तियाँ दिखाई पड़ने लगीं और वह बात बात में राशि का तिरस्कार करने लगा। अनन्त तो पहले भी भोग विलास में लगा रहता था। शराब पीना, क्लब जाना यहाँ तक कि वैश्याओं के कोठे पर जाना, इन्हीं सब बातों से उसकी पहली पत्नी रूष्ट रहती थी और जब वह अनन्त से कुछ कहती तो वह गुस्सा हो जाता था और उसी गुस्से में उसने अपनी पत्नी की हत्या भी कर दी। हत्या के केस को पुलिस वालों ने रिश्वत लेकर आत्महत्या में बदल दिया। तब जाकर मामला रफा दफा हो गया था वह तो राशि बचकर निकल गई नहीं तो इसकी भी वही गति होती। बेचारी राशि माँ बेटे को पूरी स्वतंत्रता देकर पता नहीं कहाँ चली गई।

•

# मानवी

यह पत्र बार बार पढ़कर भी नहीं समझ पा रही हूँ कि क्या उत्तर दूँ ? मानवी का नाम तो कुछ और ही है पर मैं इसे मानवी ही बुलाती हूँ। इस पत्र में मानवी ने उत्तर मांगा है कि अभिशप्त जीवन को अब और आगे कैसे चलाऊँ ?

सबको शिक्षा देने वाली मेरी बुद्धि भी अब हार मान रही है। एक प्रश्न है जो कि मुझे बार-बार समाज से पूछना पड़ेगा कि नारी का प्रियात्व, मातृत्व, पत्नीत्व क्या बार बार छला जाता रहेगा। इस युग की सचेत नारी जो कि सक्षम है वह बार बार क्यों छली जाती है ? ऐसा है कि नारी का भोलापन और क्षमा प्रदान करने की अपूर्व शक्ति। इसी के कारण वह मात खा जाती है। परन्तु यह दोनों तो गुण हैं, नारी के दोष तो नहीं हैं।

पर मानवी हर बार धोखा खा जाती है। पुरुष वर्ग अपना स्वार्थ सिद्ध करके उसको झिटक कर दूर हो जाता है। मैं पूछती हूँ कि क्या नारी का यही चरित्र है, तो इसमें मानवी का क्या दोष है ? अमावस की काली रात के समान मानवी है, पर उसकी हंसी तो शुक्लपक्ष की चाँदनी रात के समान दूधिया रंग बिखेरती है। बड़ी-बड़ी आँखों की चितवन तो मन को मोह लेती है पर मेरी मानवी दु:खों को सहते सहते इतनी अभ्यस्त होकर सोंचने लगी है शायद दु:ख से ही कुछ निर्माण कर सके। माता पिता की आँठवीं सन्तान और जन्म लेते ही माँ ने संसार से विदा ले लिया।

## 7 / मानवी

बचपन अभावों में किस प्रकार बीता यह सोचते सोचते मानवी युवावस्था की देहरी पर पहुँच गई। अभावों के नीच किसी प्रकार से एम. ए. किया और टाइपिंग सीखकर स्वयं की एक दुकान खोल लिया, जहाँ वह स्वयं टाइपिंग की शिक्षा देने लगी। इस प्रकार से मानवी अपने बूढ़े पिता के लिए अर्थोपार्जन की एक स्त्रोत बन गई। बूढ़े पिता के समस्त कार्य कलापों की आधारशिला बन गई।

जाने अनजाने मानवी के जीवन में एक ऐसा व्यक्ति आया जो मानवी को अपनी जीवन संगिनी बनाना चाहता था। मानवी के रूप रंग की प्रसंशा उस बुद्धजीवी ने किया कि मानवी अपने को अपूर्व सुन्दरी समझने लगी, उसके श्याम वर्ण को सितारों जड़ी काली रात की उपमा से विभूषित कर दिया।

मानवी ने अपने पिता से प्रेमी की समस्त बातें बता दिया और विवाह करने की सूचना दे दिया। मानवी तो सोची थी कि माँ नहीं है तो पिता जी आशीर्वाद अवश्य देंगे पर उल्टा ही हुआ पिता जी क्रुद्ध हो उठे। शायद मानवी अपना आर्थिक मूल्य छीन रही थी। परिणय के पूर्व प्रेमी ने प्रणय का आदान प्रदान चाहा तो आधुनिक मानवी के भीतर नारी संस्कारों ने स्पष्ट रूप से मना कर दिया, कि बिना अग्नि देवता को साक्षी बनाये यह सब असंभव है।

प्रणय परिणय बना और एक शिक्षित लड़की जो कि उद्धत और संस्कार विहीन मानी जाती है इसको झूठा साबित करते हुये लंबा घूंघट निकालकर अपने प्रेमी पति के साथ सासू जी के घर में प्रवेश किया। सासू जी को मानवी से अपेक्षा थी घूंघट की, तो मानवी को भी कोई आपत्ति नहीं थी।

लेकिन विवाह के तीसरे दिन सासू जी ने झाड़ू पकड़ा कर बोली कि बहू महरी छुट्टी पर जा रही है तो मैंने उसकी पूरी छुट्टी कर दी है अब घर का सब काम धाम तुम स्वयं सभाल लेना महरी की क्या जरूरत ? भोली मानवी ने समझा कि उसका प्रेमी पति हाथ से झाड़ू छीनकर महरी की छुट्टी नही करेगा, पर यह क्या रात्रि के मधुर एकान्त में अपनी प्रेमिका को समस्त लेखों का बंडल पकड़ा दिया जिसकी कापी मानवी टाइप कर दिया करे। वास्तव में मानवी सहचरी बनते बनते अनुचरी

बन गई थी।

एक दिन मानवी ने अपने जीवन साथी को अपने माँ बनने की खुशखबरी सुनाई। परन्तु भावी संतान के पिता को अपनी ही संतान अच्छी नहीं लगी। वह बार बार मानवी से गर्भपात करवाने के लिए विवश करता रहा, शायद उस पुरुष के उन्मुक्त जीवन में संतान का उत्तरदायित्व लेना भारी पड़ रहा था। एक बार फिर भोली मानवी छली गई। जिसको मानवी जीवन का सहचर मानती थी वह एक भुक्तभोगी अहंकारी, दंभी व्यक्ति है जो कि मूल्यों का शंखनाद केवल अपने स्वार्थों के लिए करता है। नारी को अनुचरी इसलिए नहीं मानता क्योंकि सहचरी का नाम देकर उससे अधिक लाभ लेना चाहता था।

मानवी का नारी हृदय चीत्कार कर उठा। आखिर कब तक विद्रोह सहती। अन्याय करना ही नहीं वरन् सहना भी गलत है। वह प्रेमी पति उसके पत्नीत्व का रस चूसने के बाद अब उसके मातृत्व का भी रस चूसना चाह रहा था। मानवी शारीरिक व मानसिक प्रताड़नाओं को झेलती हुई यही सोचती रही कि शायद जीवन साथी का अधिकार मानकर झुकती जा रही थी कि यह झुकना कहीं तो शेष होगा। सच में वह उससे प्यार करती थी परन्तु वह तो किसी और के साथ प्रेम का नाटक दोहराने लगा था। हार मानकर मानवी ने पिता का घर छोड़ा था और अब पति के गृह का त्याग कर दिया। समस्त दु:खों को झेलते हुये मानवी ने मनस्विनी को जन्म दिया और अब मानवी अपने पुत्री के लिये जीवन यापन कर रही है। कई लोगों ने सलाह दिया कि मानवी को तलाक ले लेना चाहिए।

पर मानवी का कहना है कि वह मेरे हों या न हों पर मैं तो उन्हीं की हूँ। यह भी भारतीय सती की परिभाषा को नया अर्थ दे रही है। मुझसे पूछी है कि क्या वह सही राह पर है, कहीं गलत तो नहीं। एक सार्थक विद्रोह को गरिमा। तुम्हारी गरिमा विजयी हो। तुम पुरुष को, समाज को, इस परिवेश को इस विद्रोह का अर्थ समझा सको विजयी हो।

शुभकामना

उषा. एस. एल.

•

# नगमा

पता नहीं कौन इतनी जोर से घण्टी बजा रहा है। अरे रामू जल्दी दरवाजा खोल नहीं तो आज काल बेल जल जायेगी। रामू ने दरवाजा खोला और रजिया को डांटने लगा कि क्यों इतनी जोर से घण्टीं बजाती है ? यहाँ कोई बहरा है क्या तेरे जैसा ? अब कभी भी इतनी जोर से नहीं बजाना। मैं अन्दर कमरे में थी परन्तु रामू को जोर से बोलते हुये सुनकर बाहर आ गई तो सामने दरवाजे पर बन्ने की नौकरानी रजिया खड़ी थी तो मैंने पूछा कि क्या बात है क्यों आई हो। सिलाई के पूरे रूपये तो तेरी अम्मी ले जा चुकी है अब कैसे रूपये मांग रही है ? अरे बीबी वह सरदार ठेकेदार है सामने की बिल्डिंग बनवा रहे हैं वहीं आये हैं तो उनके लिये नाश्ता का सामान मँगाना है। अम्मी ने कहा है कि सिलाई में पैसे काट लेना।

इस बन्ने की अम्मी को हर समय रूपया चाहिए कभी कोई आ जाता तो कभी नगमा को जाना होता है, कभी कुछ काम तो कभी कुछ आ जाता है। मन ही मन कुढ़ती हुई बीस रूपये का नोट रजिया को पकड़ाकर बोली कि अम्मी से बोल देना कल आ जायेगी। बेवी की फ्रॉक सिलवानी है। जी अच्छा बीबी जी, बोल दूँगी। दूसरे दिन बन्ने की अम्मी आई और नाप लेने के बाद अपनी बेटी नगमा का पूरा किस्सा बताने लगी, ए बीबी जी जो ठेकेदार सरदार है जिसने कालोनी की बिल्डिंग बनवाने का ठेका लिया है वह बहुत भला आदमी है, अल्लाह उसको बरक्कत दे, कल आया था। कह

रहा था कि नगमा की शादी अगले महीने में कर दीजिये। उसी के लिये नाश्ता मँगाना था तो आपके पास पैसा लेने भेजी थी। अरे वो ठेकेदार सरदार है और आप लोग मुसलमान है, फिर नगमा का व्याह तो आगरे में अपने दूर की किसी रिश्तेदारी में कर चुकी है, फिर यह शादी। बीबी जी क्या बताऊँ वह तो बड़ा निखट्टू निकल गया। नगमा को उससे तलाक दिलवा दिया हम लोगों ने, आँसू भरकर बोली, अब आप ही बताओ बीबी जी आजकल के जमाने में अगर कोई काम न करता हो तो कैसे घर चलायेगा, खाने को लाले पड़ रहे थे, फूल सी नाजुक नगमा सूख कर काँटा हो रही थी। भला कब तक मेरी बेटी भूखी रहती। वह तो सारा दिन घर में पड़ा सोता रहता था। दुकान भी नहीं जाता था। उसके अम्मी अब्बा ने उसे अलग कर दिया था, तभी मैंने भी अलग कर दिया और तलाक दिलवा दिया और नगमा को अपने साथ लेती आई। अब ये ठेकेदार साहब नगमा के पीछे पड़े हैं। कितनी बार शादी के लिये कह चुकें हैं पर नग़मा के अब्बा अब तक राजी नहीं हो रहे है, गैर जात का है न बीबी जी, पर मैंने बहुत समझाया कि शादी कर दो, अच्छा लड़का है, जात पात की क्या बात, इंसान अच्छा होना चाहिए। फिर उसका कोई नहीं है। माँ-बाप, भाई-बहन, कोई नहीं। अकेला है। बाप का पिक्चर हाल चल रहा है। ठेकेदारी भी कर रहा है। बड़ा पैसे वाला है बीबी जी। दोनों नेपाल गये थे तो मेरे लिये और मियाँ के लिये चार जोड़ी कपड़े लाये थे। नगमा ने अपने लिये कई सूट खरीदे थे। ब्याह तो हुआ नहीं और दोनों घूम भी आये पर, रजिया तो कह रही थी कि नगमा आपा ठेकेदार के साथ कहीं भाग गयी थी। अम्मी अब्बा दोनों परेशान हैं। आने दो आज रजिया को बीबी जी, मार मार कर भुरता बना दूँगी। बीबी जी दोनों बता कर गये थे, अब घूम आये तो क्या हुआ। अगले महीने शादी कर दे रही हूँ। वह नग़मा के बगैर रह नहीं पाता। माशा अल्लाह मेरी नगमा है भी खूबसूरत। इसीलिये पीछे-पीछे घूमता रहता है नग़मा के। और, बीबी जी नग़मा को दो सेट बनवा कर दिये है सोने के। मेरे लिये अँगूठी, अब्बा को सोने की चेन और बन्ने को कपड़े दिलवाये थे। फिर क्या है, जल्दी कर दो शादी, ऐसा दामाद कहाँ मिलेगा। हाँ बीबी जी और सारा खर्चा वही उठा रहा है। वही दावत भी देगा, दिलवाला है मेरा दामाद सरदार सुरेन्दर सिंह।

कुछ दिनों बाद बन्ने की अम्मी आई और हम सबको शादी का

न्योता देकर चली गयी। मैं शादी में थोड़ी देर के लिये उसके घर गयी। बन्ने की अम्मी बड़े प्यार से बोली बीबी चलो जॅवाईं से मिलवा दूँ। फिर मुझे नग़मा और सुरेन्द्र सिंह के पास ले जाकर बोली, देखो बेटा सामने साहब लोगों की कालोनी में रहती हैं बीबी जी, तुम्हारी शादी में आई हैं। थोड़ी देर बैठ कर मैं लौट आई। रास्ते भर सोचती रही कहाँ फूल सी नाजुक गोरी परी सी नगमा और कहाँ यह अधिक उम्र वाला सरदार। बड़ा अजीब सा लग रहा था। मन में यह शादी अच्छी नहीं लग रही थी। खैर सोचते-सोचते मैं घर आ गयी और इस बात को भूल गयी।

नगमा की शादी को छः माह बीत गया। एक दिन बन्ने की अम्मी और रजिया दोनों आईं। जो कपड़े सिलने ले गयी थी उसे देने आयी थी। बीबी एक बात बताऊँ, नगमा तो ऐश कर रही है, दो-दो नौकर हैं और बीबी जी नगमा का पैर भी भारी है। अगले महीने ही होगा। जॅवाईं अस्पताल दिखाने ले गये थे-अरे नगमा के इतनी जल्दी बच्चा भी होने वाला है। अभी छः महीने ही तो हुये है शादी को। और आप कह रही है इस महीने के बाद बच्चा होगा। ये सब कुछ समझ नहीं आ रहा है। हाँ बीबी जी नगमा आपा तो रात रात भर ठेकेदार साहब के साथ रहती थी, घूमती थी और सुबह तलक घूम कर आती थी, ही-ही-ही-ही, फट से रजिया बोल पड़ी। हरामजादी, कमीनी तू बहुत बोलती है। मेरे साथ क्यों आई। घर चल बताती हूँ तुझको। बहुत ज्यादा गुस्से में थी बन्ने की अम्मी। बस भी कीजिये। बच्चे हैं, उनके सामने गाली मत दीजिये। नहीं बीबी जी बहुत ढीठ हो गयी है। टेढ़ा मुँह लेकर बोलती रहती है चुड़ैल। खैर सिलाई के पैसे लेकर दोनों चली गयीं।

काफी दिन बीत गये, बन्ने की अम्मी को बहुत बुलवाया भी मैंने, सिलाई के लिये कपड़े लेती जाये। न जाने वह क्यों नहीं आयी। आज भी रामू को भेजा। क्यों रामू बन्ने की अम्मी ने क्या कहा है ? कब कपड़े लेने आयेगी ?। अरे मेम साहब कुछ बोलबे नहीं रही थीं, दुई बार हम कहा कि चलो मेम साहब बोलावत है, कछु बोलबे नहीं करीं तो हम चला आया। एक बात अउर है, रजिया बोलती रही के नग़मा बाजी बहुते मार खाई है। जाओ रामू अपना काम करो और रज्जो (नौकरानी) से बोल दो कि अगर बरतन धुल लिया हो तो मसाला पीस दे। रज्जो मेरे पास आकर अपने अन्दाज में फुसफुसाते हुये (जो फुसफुसाहट दूसरे घर सुनाई पड़ जाये)

बोली, मेम साहब एक बात बताऊँ ? बोल क्या है ? मेम साहब आज पन्द्रह दिन हुआ वो सरदार जो नग़मा को ब्याहा था न, उसी के गॉव पंजाब से उसकी औरत, ससुर, साला सब आ गये और सरदार और नग़मा की जम के मरम्मत किये हैं। बहुत मारे हैं दोनों को। भागकर छिपे है यहाँ। सरदार का ससुर नगमा के अम्मी अब्बा से कह गया है कि अपनी लड़की से कह दो, सुरेन्दर को छोड़ दे नहीं तो दोनों को जान से मार डालूँगा। मेम साहब, उस सरदार के दो लड़का भी है। बहुत बुरा हुआ नग़मा के साथ, बुरी फँस गयी बेचारी। क्या उसके अम्मी अब्बा बच्चे थे। रोज रोज मीट मुरगा खाना बड़ा अच्छा लग रहा था जो फँसा दिया उसको तब नहीं देखना था कि बेटी कहाँ जा रही है, क्या कर रही है। और एक बात नहीं जानती आप मेम साहब, जो सिनेमा हॉल है न, वो सरदार के ससुर का है, सुनते है कि ससुर बोल रहा था कि सनीमा हाल बेच कर सरदार को अपने गाँव पंजाब ले जायेगा। अच्छा रज्जो चल अब कुछ काम भी कर, तुमको तो छूट मिल जाये तो पूरा पुराण ही बाँच दो।

दूसरे दिन जब मैं बच्चों को स्कूल बस पर छोड़ कर आ रही थी तभी नगमा दिखायी दी। मुरझाया चेहरा, बुझी-बुझी सी। कैसी हो नगमा, क्या चल रहा है। कुछ नहीं दीदी, कहर टूट पड़ा है मुझ पर। अल्लाह ! ऐसा धोखा दिया है सुरेन्दर ने, जो दुश्मन को भी न दें। क्या, क्या सब्जबाग दिखाये थे उस फरेबी ने। मेरे तो करम फूट गये थे उसी दिन से जबसे मैंने अपने शौहर को छोड़ा था। मेरा शौहर गरीब पर नेक दिल शख्स था। थोड़ा कमाते थे पर इज्जत और प्रेम से तो खाते थे। अम्मी अब्बा भी उस सरदार के पैसे से चुप हो गये। तलाक दिलवा दिया था मुझे अपने शौहर से। शायद उसी की बददुआ लग गयी मुझे। दीदी आप तो कहानी लिखती हैं न। पर देखिए अल्लाह ने भी क्या कहानी लिखी मेरी। चलती हूँ दीदी, खुदा हाफिज।

मैं खड़ी रह गयी। नगमा धीरे-धीरे चलते हुये ओझल हो गयी। ट्रिन-ट्रिन, बच के ओय, बच के। पीछे से रिक्शे की घण्टी और रिक्शे वाले की कर्कश आवाज सुन कर मेरी तन्द्रा भंग हुयी। मैं घर को चल पड़ी।

●

# अम्मा का आँगन

आँगन आँगन करते अम्मा चली गई। पर मेरी अम्मा को अंतिम समय में भी आँगन नसीब नहीं हुआ डोली तो उनकी आँगन में आई पर अर्थी न उठ सकी।

घर का आँगन अम्मा को बहुत प्रिय था। उनके कथनानुसार जब ब्याह कर आयीं तो समस्त रस्म व रिवाज आँगन में ही सम्पन्न हुये। हम सब बच्चों का घुटने के बल सरकना और चलना आँगन में ही हुआ। अचार, पापड़ बड़ियाँ सब आँगन में ही बनी। प्रात: काल आँगन की बुहारी अम्मा स्वयं करती थी। सूर्योदय से सूर्यास्त का समय आँगन में ही बीतता था। हम बच्चों का बचपन तो आँगन में खेलते-खेलते बीता और विवाह की वेदी भी इसी आँगन में रक्खी गयी।

पर अचानक पिता जी की मृत्यु के पश्चात् अम्मा को गहरा सदमा लगा और उन्होंने विस्तर पकड़ लिया। जब बीमार थीं तो बड़े भैया और छोटे भैया के बीच घर का बंटवारा हो चुका था। बड़े ने नीचे का हिस्सा ले लिया छोटे भैया ने ऊपर रहना स्वीकार कर लिया। अस्वस्थ होने के कारण बड़े भैया ने अम्मा को नीचे ही रक्खा। पर भैया रेलवे के गार्ड थे तो अक्सर घर से बाहर ही रहते थे। इसलिये अम्मा की देखभाल वह स्वयं नहीं कर पाते थे। बड़ी भाभी अम्मा की देखभाल नहीं कर पाती थीं। कारण स्पष्ट था उनका स्वभाव व व्यवहार दोनों ही अच्छा न था। वह किसी के

साथ समझौता नहीं कर पाती थी। शादी के शुरुआत में तो यदि अम्मा उन्हें कुछ भी समझाती या कहतीं तो वह पूरा घर सिर पर उठा लेती अम्मा से लड़ती बड़े भैया जब घर आते तो उनसे चिल्ला चिल्ला कर लड़ती इतना ही नहीं कोपभवन में चली जाती। तो चार पाँच दिन भूखी पड़ी रहती। किसी की भी नहीं सुनती। अपने बच्चों का भी ध्यान नहीं रखती घर छोड़कर भाग जाती। ऐसी समस्याओं से परिपूर्ण भाभी भला अम्मा का कितना ध्यान रखती न तो अम्मा को समय पर दवा मिलती न ही उनकी सेवा टहल हो पाती इस प्रकार अम्मा की हालत काफी खराब हो गई। वह तो भला हो महराजिन का जो बड़ी भाभी के घर पर काम करती वही मेरे घर भी काम करती थी। उसने मुझे पूरी बात बताई तो मैं भैया के घर आई और अम्मा को अपने साथ ले जाना चाह रही थी लेकिन अम्मा ने बेटी के घर जाने से मना कर दिया यह कह करके कहीं मर न जाऊँ तुम्हारे घर नहीं तो आँगन भी न मिले। पर छोटे भैया व भाभी को जब पता चला तो अम्मा को तुरंत ऊपर अपने पास ले आये, दोनों लोगों ने दिन रात एक करके अम्मा की सेवा में लगे रहे और अम्मा का स्वास्थ्य काफी ठीक हो गया था। भैया अपने हाथ से दवा खिलाते भाभी उनका पथ्य समय पर तैयार कर देती हाथ पैर की मालिश स्वयं करती, नित्य नियम से समस्त कार्यों से निपटकर प्रात: रामायण का पाठ सुनाती। अम्मा ने भइया-भाभी को बताया कि मेरे मरने के बाद मेरी अर्थी आँगन से ही उठवाना।

एक दिन की बात है कि अम्मा सुबह नाश्ता आदि करके रामायण सुनने के लिये बैंठी थीं और रामायण सुनते सुनते लुढ़क गईं। भाभी अम्मा कहकर रोने लगीं छोटे भैया भी आ गये अम्मा को पकड़कर रोने लगे। मैं भी पहुँच गई थी। बड़े भैया तो एक दिन पहले ही जा चुके थे। बड़ी भाभी थीं पर आई नहीं।

अम्मा की अर्थी को आँगन से उठाने के लिये सभी लोग कह रहे थे। छोटे भैया नीचे बड़ी भाभी से कहने के लिये गये कि जीने के पास का दरवाजा जो आँगन में खुलता है उसे खोल दें। पर यह क्या घर के बाहर बड़ा सा ताला लटक रहा है। भाभी लोग कहाँ गईं यह किसी को भी मालूम नहीं था। छोटे भैया ने कई आदमी भेजे कि उन्हें बुलाकर लायें पर वह नहीं मिलीं मेरी अम्मा की अर्थी ऊपर ही सजी और उनका पार्थिव शरीर अंतिम

यात्रा के लिए ऊपर घर से चल पड़ा। बड़े भैया के न रहने के कारण पंडितों ने छोटे भैया से मुखाग्नि भी दिलवाया। अम्मा का प्रिय आँगन छूट गया बिना अर्थी को कंधा दिये।

●

# वात्याचक्र

मेम साहब आज बहुत कम डाक आई है, ठीक है रखो। पहला लिफाफा खोलते ही मन अवसाद से भर गया। मानवी अपने प्रश्न का उत्तर अब भी मांग रही है। पिछले दो पत्रों में भी यही लिखी थी कि जो निर्णय लेकर चल रही हूँ, क्या वह उचित है या अनुचित, आप मेरे इस अभिशप्त जीवन को क्या कहेंगी, क्या कहकर हसेंगी। दीदी इस बार मुझे अपने प्रश्न का उत्तर अवश्य मिलना चाहिए।

मैं क्या उत्तर दूँ, मेरी लेखनी यहीं पर रूक जाती है, उसके अभिशप्त जीवन के अभिशप्त वर्ष जो एक वात्याचक्र के समान फड़फड़ा रहे हैं, मुझे स्वयं उलझन में डाल देते हैं कि क्या नारी के हिस्से में केवल दु:ख दर्द ही है। दर्द का संदर्भ तो बदल जाता है, पर हर युग में नारी दर्द को ही झेलती है। नारी का मातृत्व, पत्नीत्व, प्रियत्व सब कुछ तो पुरुष वर्ग द्वारा छला जाता है। नारी हर बार छली जाती है यही तो उसकी भाग्य की बिडम्बना है।

मानवी भी छली गई है जिस पुरुष को उसने अपना तन, मन दोनों सौंपा ; वही उसको झिड़क कर दूर हो गया। अपनी माता पिता की बारहवीं संतान माँ तो बचपन में ही परलोक सिधार गई थी परन्तु पिता जीवित हैं। मानवी का नाम मेरा दिया हुआ है। पिता का दिया नाम तो कुछ और ही है। मैं मानवी इसलिए बुलाती हूँ, क्योंकि मानवी के अन्दर मानवोचित गुणों

का परिपूर्ण समावेश है। ट्यूशन करके मानवी ने एम. ए. पास किया और शीघ्र ही छोटी सी नौकरी भी करने लगी। इस छोटी सी नौकरी ने मानवी को अर्थोपार्जन की क्षमता प्रदान की। वह अपने परिवार के लिये बहुमूल्य हो गई। मानवी को मालूम है कि यह नया मूल्यांकन उसके आर्थिक रूप का है और किसी रूप का नहीं है। उसे अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी एक बुद्धिजीवी जो कि एम. ए., पीएच. डी....मिल गया और उसकी दूधिया हँसी के फूलों को अपने अंजलि में भर लिया, प्रशंसा की झड़ी लगा दी मानवी तुम काली हो ; पर सितारों जड़ी काली रात हो।

●

# पोटली

माँ के घर एक सप्ताह से ऊपर रहकर आज मैं वापिस जा रही हूँ अपने पति प्रसून के घर। कार्तिक (मेरा बेटा) व मुझे भइया ही छोड़ने आये हैं।

भइया ने मेरी विदाई में पाँच टोकरी दशहरी आम के मिठाई व फल के डिब्बे व पेटियाँ भी साथ में रखवाये हैं। मेरे कपड़े के साथ-साथ प्रसून का भी सूट, कार्तिक के दर्जन भर कपड़े, खिलौने सब स्काई बैग में रक्खे हैं। खोईछा का चावल बासमती है, वह भी पूरा तीस किलो। कार्तिक को पाँच सौ रूपये, मुझे हजार रूपये ऊपर से दिये हैं। भाभी ने मेरे सारे कपड़े लेदर बैग में रख दिये हैं। कहने का तात्पर्य है कि इस आलीशन विदाई के सामानों को देखकर प्रसून को मेरी हँसी उड़ाने का अवसर नहीं मिल पायेगा।

भइया मुझे बहुत मानते हैं, उनका स्नेह मेरे लिये अत्यधिक है, पर इस विदाई में कहीं कुछ कमी दिखाई पड़ रही है वह कमी है, माँ की ममता भरी पोटली की जिसकी कमी भाई बहन दोनों को खल रही है।

जब बाबू जी मुझे लेने आते थे तो माँ की सख्त हिदायत रहती थी कि गर्मी का दिन है, भोर में लेकर चलियेगा ताकि बच्चों को लू न लगे। प्रसून इस बात को लेकर बहुत हँसते थे, कि तुम्हारी माँ तुम्हें अभी तक बच्चा ही समझती हैं। जिस दिन बाबू जी के साथ घर आती थी उसी

दिन से मेरी माँ अपनी कोई पुरानी साड़ी को लेकर उसके एक छोर से छोटे-छोटे सामानों की पोटली बाँधने लगती थी। किसी में लहसुन, मिर्चा व हल्दी लगाया हुआ भुना चना तो किसी में चावल का भूजा, सूखी खटाई माघ के चौथ पूजा का तिल का लड्डू इसी प्रकार से माँ अपनी ममता भरी पोटली पूरा साड़ी की बाँध देती थी फिर मुझे समझाती थी देख सोनवा पाहुन के तिल का लड्डू जरूर खिला देना प्रसाद है, मसूर के दाल की पकौड़ी बनाकर खिला देना। फिर मेरी लाल पीली साड़ी भी देती बड़े-बड़े फूलों वाली कहती थी कि सोना यह हरतालिका तीज की साड़ी है जरूर पहन लेना दूसरी साड़ी तुम्हारे बाबू जी ले आये थे देख तो अच्छी है न। मैं उनकी हर बात को ध्यान से सुनती फिर हाँ कह देती।

कभी कभी माँ भूल जाती थी कोई चीज बांधने के लिये तो बड़े प्यार से कहती थी सोना मेरी बेटी मुंगौड़ी और बड़ी तो बांधना भूल गई थी अच्छा कहते हुये साड़ी के एक छोर में उन दोनों चीजों को पोटली बंध जाती थी।

इतने ढेर सारे सामानों की पोटली के साथ मैं विदा होती थी। बाबू जी मुझे छोड़ने आते थे और तुरन्त वापिस भी चले जाते थे। उनके जाने के बाद मैं एक-एक करके उन पोटलियों को खोलकर सब सामान रखती थी। प्रसून को तिल का लड्डू जरूर दे देती थी। प्रसून सब सामान की पोटली देखकर हँसते थे कि इनकी क्या जरूरत है यहाँ लाने की। मेरी साड़ी आदि कपड़ों को देखकर तो हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाते थे कहते थे कि सोना प्लीज इस साड़ी को कामवाली को दे देना यहाँ मत पहनना।

पर प्रसून को क्या मालूम कि इन पोटलियों में जो सामान है वह सब मेरी माँ की ममता व स्नेह से भरी हुई है जो कि अब कभी भी मुझे नहीं मिल सकता है। तभी तो भइया कह रहे हैं कि सोना को ऐसा कुछ न दो जिसे देखकर प्रसून मजाक बनायें।

आज इस शाही विदाई के साथ-साथ मुझे अपनी माँ की ममता, स्नेह व अपनत्व भरी पोटली की याद आ रही है जिसको याद करके भइया के नेत्र भी आँसुओं से भर गये।

•

# लाटरी

"जरा जल्दी समान पैक कर दीजियेगा, यह सामानों की सूची है।" इस, आवाज को सुनकर मैं चौंक पड़ी, क्योंकि, यह आवाज कुछ जानी पहचानी लग रही थी, पता नहीं क्यों ? मेरा मन बार बार यही कह रहा था कि इस प्रौढ़ा को मैं जानती हूँ, कहीं, यह विमला महेश्वरी तो नहीं है जो, कि मेरे साथ, राजकीय उच्चतर-कन्या विद्यालय में, नवीं क्लास में पढ़ती थी। परन्तु, संकोचवश मैं पूछ नहीं पा रही थी। आश्चर्य की बात तो यह थी वह प्रौढ़ महिला जिसको कि, मैं अपनी सहपाठिनी समझ रही थी, वह भी मुझे एकटक निहार रही थी। अन्त में उसी प्रौढ़ा ने मुझसे पूछा कि "माफ करियेगा, क्या आप का नाम स्नेह लता पाठक है।" तुरन्त मैं भी पूछ बैठी कि "क्या ? आप विमला माहेश्वरी हैं।" आपने, किशनगंज के राजकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से हाईस्कूल पास किया है। वह तपाक से बोली कि "मेरी तो प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर इण्टर तक की पूरी, शिक्षा उसी विद्यालय में हुई है।" मैं बोली कि,"मैंने भी वहीं से हाईस्कूल किया है।"

"अरे वाह ! स्नेह तुम, गजब का संयोग है, बड़ी देर से तुम्हें पहचानने की कोशिश कर रही हूँ। पर इतने दिनों बाद तुम इस तरह से आज मिल जाओगी। इसी, से मुझे संकोच हो रहा था, पूछने में। सच विमला इस प्रकार से आज मिलकर बेहद प्रसन्नता हो रही है।"

इसी बीच दुकानदार ने कहा कि “मैडम आप दोनों लोगों का सामान पैक हो गया।” विमला बोली कि “चलो स्नेह कार में सामान रखवा लेते हैं, फिर घर चलकर इतमिनान से बात करेंगे।” सब सामान कार में रखवाकर मैं विमला के बगल आगे की सीट पर बैठ गई। कार को स्टार्ट करके विमला ने अपने घर की तरफ मोड़ा और मुझसे पूछा कि “स्नेह तुम यहाँ कहाँ रहती हो ? क्या ? तुम्हारी ससुराल यहीं पर है।” “नहीं विमला मेरे पति यहीं डिग्री कालेज में प्रधानाचार्य के पद पर नियुक्त हैं और उसी कालेज में मैं प्रवक्ता के पद पर हूँ। परन्तु विमला तुम यहाँ कहाँ रहती हो ?” किशनगंज तुमने कब छोड़ दिया ? शान्त, गम्भीर विमला ने कहा कि “स्नेह मेरी तो एक लम्बी कहानी है। आजकल मैं यहाँ राजकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में प्रिंसपल हूँ, इसी वर्ष मेरी पदोन्नति हुई और फैजाबाद से स्थानान्तरित होकर इसी ग्रीष्मावकाश में आई हूँ। अब घर पहुँच कर अपनी जीवन की कहानी सुनाऊँगी तब तुम सुनना कि क्या मोड़ मेरे जीवन में आये और कैसी कैसी सीढ़ियों पर चढ़ते उतरते यहाँ पर पहुँची हूँ।” विमला की बात मैं स्पष्ट रूप से समझ नहीं पा रही थी पर इतना अवश्य लग रहा था कि विमला का जीवन सामान्य नहीं है, अवश्य कठिनाइयों से भरा है जिसे कि वह मुझे सुनाने को उतावली हो रही है। परन्तु बात को मोड़ देने के लिये मैंने विमला से पूछा कि अच्छा बताओ तुमने मुझे कैसे पहचाना, वह झट से बोली “अरे स्नेह तुम तो बिल्कुल वैसी ही हो जैसे पहले थी केवल चश्मा चढ़ गया है, आँखों पर।” “अच्छा स्नेह तुमने मुझे कैसे पहचाना ?” “अरे भई ! तुम तो कॉलेज के जमाने में ही इतनी सुन्दर नाक नक्श वाली, गौर वर्ण की, छरहरी शरीर वाली थी। तो भला इतनी सुन्दर विमला को पहचानने में मुझे क्या दिक्कत होगी ? बस केवल तुम्हारे गुलाबी रंग, के गौर वर्ण में थोड़ा फर्क आ गया है, शायद, बढ़ती उम्र के कारण ऐसा हो।” “हाँ, उम्र तो एक कारण है ही, पर दु:खों ने भी मेरा जीवन परिवर्तित कर दिया है, तो रंग की क्या मजाल वह क्यों नहीं बदलता।” अच्छा चलो घर तो आ गया है अब अच्छी तरह से बात होगी।

घर पहुँचकर विमला ने अपनी आया से कहा कि खाना लगाओ मेम साहब का और मेरा। आया ने पहले ही खाना मेज पर लगा रखा था। हम दोनों ने खाना खाया। खाना बेहद स्वादिष्ट बना था इसलिये मैंने कुछ ज्यादे ही खा लिया। मुझे विमला अपने बेडरुम में ले गई आराम करने के

लिये कहकर स्वयं वस्त्र बदलने वाथरुम चली गई। मैं लेटे लेटे सोचने लगी कि क्या विमला के पति इसके साथ नहीं रहते हैं। क्योंकि विमला ने अपने पति व बच्चों के बारे में कुछ भी नहीं बताया या फिर इस गौरांगना ने विवाह न करके आजन्म कुँवारी रहने का व्रत ले लिया है। इसी सब उधेड़बुन में ही थी कि अचानक मेरा ध्यान शेल्फ पर रखी हुई फोटो पर चला गया। फोटो उठाकर ध्यान से देखने लगी, और बीस वर्ष पहले की विमला व उसकी दादी की पूरी कहानी मेरे सामने अंकित हो गई। यह मातृ पितृ विहीना विमला अपनी वृद्धा दादी के साथ किशनगंज के छोटे से घर (जो कि उसके पिता ने बनवाया था) में रहती थी। विमला आर्थिक अभावों में सदा घिरी रहती थी, कभी फीस के रूपये नहीं रहते थे, तो कभी किताब व कापी नहीं हो पाती थी तो, कभी जाड़े के कपड़े नहीं हो पाते थे तरह तरह की परेशानियाँ विमला के समक्ष रहती थीं। परन्तु एक बात है कि विमला में रूप के साथ साथ गुण भी बहुत थे कि इतनी कठिनाइयों के बाद भी यह रूप की रानी विमला, बहुत ही स्वाभिमानी थी। किसी के सामने हाथ नहीं फैलाती थी। मैं यह सब सोच ही रही थी कि तब तक विमला अपने वस्त्र बदलकर आ गई लेटते हुये बोली कि "क्या देख रही हो स्नेह, दादी की फोटो," "हाँ, दादी की फोटो देख रही हूँ।"

"अरे स्नेह दादी को गुजरे वर्षों बीत गये, दादी की मृत्यु भी अचानक हो गई थी। दादी का मरना व लाटरी का मिलना दोनों ही साथ हुआ, किशोरावस्था में दादी भी साथ छोड़ कर चली गई, तब से मैं जीवन की प्रत्येक परिस्थितियों का सामना अकेली ही कर रही हूँ।" "स्नेह मेरा जीवन दु:ख से ज्यादे भरा हुआ है सुख के बजाय।" महाभारत का श्लोक "सुखात् बहुतरं दु:खजीविने नाऽत्र संशय: जीवन में सुख से अधिक दु:ख होता है इसमें संदेह नहीं, यह श्लोक तो पूर्णरुप से मेरे ऊपर लागू होता है।" मैं बोली कि तुम क्यों इतनी दु:खी होती हो दु:ख सुख तो जीवन के दो पहलू हैं, सुख के बाद दु:ख और दु:ख के बाद सुख का क्रम चलता ही रहता है, फिर मेरी सखी, इस संसार में कोई भी तो सुखी नहीं है सबको किसी न किसी प्रकार का दु:ख घेरे हुये, हाँ कोई मुँह से बताता है कोई चुपचाप सहता है। फिर, तुम तो बहुत साहसी हो, धैर्यवान व बुद्धिमान भी हो। तुमने तो कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना डटकर किया है, इस बात को तो मैं अच्छी तरह से जानती हूँ। पर विमला दादी को

अचानक क्या हो गया था, कुछ अस्वस्थ थीं क्या ? वह शान्त व गम्भीर होकर बोली कि नहीं स्नेह, दादी तो पूर्ण रूप से स्वस्थ थीं और उस दिन भी स्वस्थ थीं। तुम्हें तो यह मालूम है कि उन दिनों आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण घर में कोई नौकरानी नहीं थी अतएव दादी पूरे घर का काम स्वयं करती थीं।

शायद तुम्हें यह भी याद हो, कि एक बार किसी परिचित के आग्रह करने पर दादी ने लाटरी का टिकट खरीदा था। दादी तो यही सोचती थी शायद लक्ष्मी मैया की कृपा, उन पर हो जाये और धनराशि का एक समूह उन्हें प्राप्त हो जाय जिससे कि अभावग्रस्त जीवन में कुछ परिवर्तन आ जाये। सच कहूँ स्नेह, तो दादी को मेरे विवाह की चिन्ता रात दिन पेरशान किये रहती थी दहेज लोभियों को दहेज की मोटी रकम न दे पाने के कारण दादी निराश रहती थीं। लाटरी का टिकट इसलिये भी खरीदी थी कि यदि पाँच लाख रूपया मिल जायेगा तो मेरा विवाह अवश्य हो जायेगा सरलता से।

मैं बोली कि हाँ विमला, मुझे अच्छी तरह से याद है कि उस लाटरी के टिकट को तुम अपने साथ नित्य कालेज लेकर आती थी और इण्टरवल में लाइब्रेरी जाकर समाचार पत्र अवश्य देखती थी। शायद तुम्हें यह भी याद हो कि एक दिन तुम लाइब्रेरी में बैठी समाचार पत्र में इतनी निमग्न थी कि ठीक उसी समय अनु व मैं लाइब्रेरी गई हुई थी, भगवती चरण वर्मा का प्रसिद्ध उपन्यास मृगनयनी लेने के लिये। तुम्हें, अनु ने बुलाया भी परन्तु तुम बोली नहीं, तभी तो अनु ने मजाक किया कि आज विमला बहुत ध्यान से योग्यवर की तलाश वाला कालम पढ़ने में लगी हुई है, उसको मेरी बात सुनने की फुरसत कहाँ है, वह यह भी बोली अगर तुम ढूँढ न पाई हो तो मैं तुम्हारी मदद करुँ नहीं तो कहो अच्छा सा दूल्हा ही तुम्हारे लिये पसंद कर दूँ। अच्छा, एक बात बताओ क्या तुम सचमुच नहीं सुन पाई थी अथवा जनबूझकर बोलना नहीं चाहती थी। अरे नहीं, नहीं स्नेह ऐसी बात नहीं थी, मैं तो अनु की पूरी बात सुन भी नहीं पाई थी वह तो हम लोगों के क्लास की हँसमुख लड़की थी। वह बातों की फुलझड़ी ऐसे छोड़ती थी कि बिना हँसे कोई रह नहीं सकता था।

एक दिन की बात है स्नेह अपनी आदत के अनुसार मैं इण्टरवल में लाइब्रेरी कक्ष में बैठकर समाचार पत्र देख रही थी क्योंकि उस दिन के

समाचार पत्र में लाटरी के टिकट के नंबर निकले थे। जानती हो कि क्या हुआ इण्टरवल कब समाप्त हो गया मुझे पता नहीं चला और बड़ी मैडम पूरे कालेज का राउण्ड लेते हुये लाइब्रेरी कक्ष में भी आ गई और जोर से डॉटते हुये बोली क्यों विमला तुम कक्षा में क्यों नहीं गई। इण्टरवल कब का समाप्त हो चुका है क्या तुम्हारा टैस्ट आदि था। मैं तो स्नेह चुपचाप खड़ी हो गई, कुछ बोलने का साहस भी नहीं हो रहा था। तुम्हारा नाम बड़ी मैडम को याद था। हाँ, याद भी क्यों न होगा, तुम खेलकूद, वाद-विवाद प्रतियोगिता में सदैव सर्वप्रथम आती थी तुमसे इतना नाराज इसलिये हो रही थी कि हर क्षेत्र में सर्वप्रथम रहते हुये भी कक्षा में न जाकर इतनी बड़ी गलती तुमने कैसे कर दी फिर तो स्नेह हिम्मत जुटाकर मैंने लाटरी की बड़ी बात मैडम को स्पष्ट रूप से बता दिया। मैडम मुझे डाटते हुये बोली कि ठीक है लाइब्रेरी कक्ष के बाहर खड़ी रहो और छुट्‌टी में पहले मुझसे मिलना, तब घर जाना और, सुनो समाचार पत्र व लाटरी का टिकट भी साथ में लेती आना। तब मैंने पूछा कि क्या तुम छुट्‌टी के बाद बड़ी मैडम के आफिस में गई थी ? विमला ने कहा कि तुम भी खूब हो भला इतनी अनुशासन प्रिय मैडम के आदेशों का पालन न करके अपने सिर आफत बुलानी थी और फिर क्या कालेज में आगे की पढ़ाई नहीं करनी थी लगता है स्नेह तुम बड़ी मैडम को भूल गई हो, हो भी सकता है क्योंकि तुम हाईस्कूल की परीक्षा देने के बाद तो चली गई थी, हाँ विमला मेरे पिता जी का स्थानान्तरण हो गया था गोण्डा, परन्तु बड़ी मैडम की याद मुझे अब भी है मैं उन्हें भूली नहीं हूँ। लाटरी व समाचार पत्र दोनों लेकर गई और बड़ी मैडम के मेज पर रखकर एक किनारे खड़ी हो गई।

मैडम थोड़ी देर समाचार पत्र देखकर बोली कि विमला तुम्हारी लाटरी का नम्बर तो आ गया। देखो यही है न मुझे दिखाते हुये बोली अब तो पाँच लाख तुम्हें मिल जायेगा, क्या करोगी ? फिर डॉटते हुये बोली यह लाटरी का टिकट खरीदने का चस्का कब से लग गया है अब जुआ खेलने में भी माहिर होना चाहती हो। लगता है बड़ी मैडम बहुत नाराज हो गई थी तुमसे। हाँ स्नेह उस समय तो बहुत क्रोधित थीं परन्तु आश्चर्य की बात देखो उन्होंने मुझे समाचार पत्र व टिकट दोनों दे दिया और कहा ले जाओ इसे और अब घर जाओ आगे ऐसी गलती मत करना क्लास कभी भी नहीं छोड़ना चाहिये। मैं तो इतनी शीघ्रता में थी कि कैसे पंख लगाकर शीघ्र घर पहुँच

जाऊँ और अपनी प्रिय दादी को यह खुशखबरी सुनाऊँ। जब घर पहुँची तब दादी बाहर खड़ी होकर प्रतीक्षा कर रही थी मैं तो, दरवाजे से चिल्लाने लगी कि दादी मिल गया। अंदर चलो तो तुम्हें बताती हूँ कि क्या मिल गया। दादी तो हतप्रभ थीं कि मैं क्या बोल रही हूँ कि, मिल गया मिल गया। फिर स्नेह, मैं दादी को उनकी चारपाई पर बैठा कर बोली कि अरे दादी ! जो लाटरी का टिकट तुम खरीदी थी, उसका नम्बर अखबार में आ गया है अब दादी तुम्हें पाँच लाख रूपया मिल जायेगा। जानती हो दादी इतनी ज्यादा प्रसन्न थी क्या बताऊँ तुम्हें स्नेह लगातार यही पूछे जा रही थी कि का विमली (प्यार से दादी विमला न बुलाकर विमली ही बुलाती थी) कइसे मिलिहे पाँच लाख रूपया बचीया कब तक मिल जइहैं। अरे बिटिया पाँच लाख बहुत होत हैं, पाँच लाख रूपया, पाँच लाख रूपया पाँच लाख पाँऽच---लाऽऽख-- करते करते चारपाई पर लुढ़क गई। अरे पाँच लाख बोलते बोलते ही लुढ़क गई हाँ स्नेह ऐसा ही हुआ था। मैं तो कुछ भी नहीं समझ पाई थी कि दादी को क्या हो गया था। मैं तो दादी को पकड़कर उठाती रही पर भला दादी का निर्जीव शरीर कैसे उठता उनका तो देहान्त हो गया था। यह तो मुझे तब पता चला जब कोई पड़ोस के डॉक्टर शर्मा को बुलाकर ले आया और उन्होंने दादी को देखते ही कह दिया जबरदस्त दिल का दौरा पड़ जाने से मृत्यु हो गई है। इतना सुनते ही स्नेह मैं स्वयं अचेत होकर गिर पड़ी और जब मुझे होश आया तब मैंने देखा कि बुआ जो कि पास ही गाँव में रहती थी मेरे पास बैठी हुई थी। मेरी प्रिय दादी का पार्थिव शरीर अंतिम संस्कार हेतु जाने के लिये तैयार हो चुका था। मुझे तो विधाता की क्रूरता पर हंसना व रोना दोनों ही आ रहा था कि वाह रे ! भगवान तुम्हें तनिक भी मेरे ऊपर दया नहीं आई क्या जीवन दिया है तुमने। अब मुझे भी मौत दे दो जीवन लेकर क्या करूँगी कोई जीने की लालसा नहीं है। परन्तु मुझे भला क्यों मौत आती क्योंकि जीवन के दु:ख को कौन झेलता। इतना कहकर विमला चुप हो गई और उसके आँखों से आंसू गिरने लगे थे तो मैंने विषय बदल दिया और बोली अच्छा जाने दो अब तो वह सब बीते बहुत दिन हो गया। फिर तुम तो स्वयं इतनी धैर्यवान व साहसी हो कि ऐसी विषम परिस्थितियों में भी डिगी नहीं, बल्कि हिम्मत से काम करती रही। सामान्य लोगों की बस की बात नहीं है तुम तो असाधारण हो बस और क्या कहूँ। ब्रह्मा ने भी खूब जाँच परख कर बनाया है।

हाँ तो मैं ब्रह्मा की अदभुत कृति हूँ शायद हूँ भी बस यह समझो कि मुझे मांगने से कुछ भी नहीं मिलता है यानि मौत भी नहीं मिलती है वह भी अपने समय से आयेगी। अच्छा अब बस करो तुम बेहद दु:खी हो गई हो फिर कभी बताना मुझे। इतना कहने पर और ज्यादे दु:खी होती हुई बोली कि अच्छा तुम भी नहीं सुनना चाहती हो मेरी कहानी हाँ, भला क्यों सुनना चाहोगी कोई रोचक तो है नहीं दु:ख ही दु:ख तो भरे हैं इस कहानी में।

मैं प्रेम जताते हुये अपनी सखी से बोली कि ऐसी बात नहीं है तुम ज्यादे भावुक हो गई थी इसलिए मैं इस प्रकार से बोली कि रहने दो मैं भी कितनी मूर्ख हूँ, इतने दिन बाद अपनी सखी से मिली हूँ और कुछ बात नहीं अपना रोना लेकर बैठ गई। मुझे ऐसा लगा कि वह बुरा मान गई। इसलिए मैं उससे बोली कि ऐसा मत कहो मुझे क्षमा करो तुम कुछ गलत समझ गई हो विमला अब बताओ दादी की मृत्यु के बाद तुमने आगे की पढ़ाई कैसे पूरा किया। कुछ देर बाद शान्त होकर बोली कि अब तक मैंने किसी को अपने बारे में कुछ भी नहीं बताया था परन्तु आज तुमको बताकर अपने मन का बोझ हल्का करना चाहती हूँ। इसलिए तुम अवश्य सुन लो, बस इतनी बात मेरी मान जावो स्नेह।

प्रेम जताते हुये मैं बोली अच्छा विमला रानी जी, अब ध्यान से सुनुँगी और कुछ भी नहीं बोलूँगी। तब जाकर विमला आगे की बात बताती हुई बोली कि स्नेह उस समय तो मैं पागल हो गई थी मुझे अपनी सुध बुध भी नहीं रहती थी वह तो कहो कि बुआ मेरे साथ सालभर तक रहीं और उन्होंने मुझे विशेष सान्त्वना दिया तब जाकर मैं धीरे-धीरे सामान्य हुई। हाँ अवश्य तुम्हारी मन: स्थिति ठीक नहीं रही होगी। वार्षिक परीक्षा देने के बाद तुम किसनगंज में ही रही या बुआ के साथ गाँव चली गई थी। हाँ मैं बुआ के साथ गाँव चली गई थी और ग्रीष्मावकाश गाँव में ही बिताकर जुलाई में कालेज खुलने के एक सप्ताह पूर्व ही किशनगंज आ गई थी। मुझे छोड़ने बुआ आई थी और उनके साथ उनके चचिया ससुर जी जो कि किशनगंज के एल. आई. सी. दफ्तर में कार्य करते थे और एक वर्ष पश्चात् रिटायर होने वाले थे वह भी आये थे। बुआ तो थोड़े दिन मेरे साथ रहीं और जाते समय मुझसे बोली कि विमला यह चाचा जी तुम्हारे साथ रहेंगे बाहर वाला कमरा ठीक कर दिये हूँ उसी में रहेंगे। तुम चाचा जी का भोजन आदि

बना दिया करना और चाचा जी के संरक्षण में रहोगी तो तुम्हें किसी भी प्रकार से तकलीफ नहीं होगी। जब से चाची का देहान्त हुआ तबसे चाचा जी अकेले ही यहाँ रहते हैं तो मैंने उनसे कहा कि चाचा जी विमला अम्मा के देहान्त के बाद अकेली ही यहाँ रहेगी और पढ़ाई पूरी करेगी अतएव यदि आप विमला के साथ रह जाते तो बहुत ही अच्छा होता तो चाचा जी तुरन्त मान गये। बहुत ही नेक इन्सान हैं। बुआ ने लाटरी का रूपया जो मिला था उसको बैंक में जमा करवा कर और समस्त कागज को संभाल कर रखने की हिदायत देकर गाँव चली गई। बुआ के चले जाने के बाद बिलकुल भी अच्छा नहीं लग रहा था। पर विवश थी क्योंकि आगे की पढ़ाई तो पूरी करनी थी। यूँ तो गाँव किशनगंज से दूर नहीं था परन्तु सवारी आदि की दिक्कत थी समय पर न मिलने से कालेज में देर हो जाती यही सब सोचकर किशनगंज में ही रहना ठीक है अतएव रहने लगी फिर स्नेह पिता जी का बनवाया हुआ मकान भी तो यूँ ही पड़ा रहता यही सब सोच समझकर किशनगंज में ही रहने का निर्णय कर लिया था। तुमने उचित निर्णय लिया। हाँ तो स्नेह सुनो चाचा जी तो रिटायर हो गये और गाँव चले गये मैं भी इण्टर की बोर्ड की परीक्षा देकर गाँव चली गई थी परन्तु जब इण्टर का परीक्षाफल निकला तो मैं प्रथम श्रेणी में पास थी और आगे बी.ए. करना चाहती थी। हाँलाकि बुआ और फूफा जी दोनों लोगों ने मना किया कि अब रहने दो और आगे पढ़ने के लिये यदि तुम्हारी इच्छा है तो विमला प्राइवेट कर लेना। परन्तु मैं तो बी.ए. करना चाहती थी और प्राइवेट नहीं करना चाहती थी रेगुलर रहकर करना चाहती थी। परन्तु मेरे आग्रह पर बुआ व फूफा जी मान गये फिर जब चलने को हुई तब चाचा जी ने बुआ से कहा कि मैं भी विमला के साथ चला जाता हूँ गाँव में क्या करूँगा रहकर शहर में कोई पार्ट टाइम वर्क कर लूँगा तो मेरा समय भी व्यतीत हो जायेगा। भला मुझे क्यों आपत्ति होती इसमें फिर चाचा जी मेरे साथ किशनगंज आ गये और किसी दफ्तर में कुछ काम भी मिल गया और चाचा जी अपने कार्य में व्यस्त हो गये। उधर मैं भी बी.ए. में दाखिला लेकर अपने अध्ययन में व्यस्त थी।

धीरे-धीरे दीपावली भी आ गई तो चाचा जी पूछे कि विमला गाँव चलोगी दिपावली में तो मैंने कह दिया कि हाँ चलूँगी। बस इतना कहने की देरी भर थी शाम को चाचा जी बुआ व फूफा व उनके बच्चों के लिये कपड़े

और मिठाई व पटाखे लेकर आ गये। मेरे लिये भी कपड़ा लाये थे और मुझे थमाते हुए बोले कि बस तैयार हो जाओ विमला अभी बस मिल जायेगी गाँव के लिये। गाँव में दीपावली मनाने के बाद फिर वापिस आ गई तो चाचा जी ने पूछा कि विमला तुम्हें कपड़ा कैसा लगा जो मैं तुम्हारे लिये लाया था परन्तु मुझे पता नहीं क्यों इस प्रकार से उनका पूछना अच्छा नहीं लग रहा था फिर भी मैंने चाचा जी से कह दिया कि अच्छा है।

किन्तु तुम्हें क्यों नहीं अच्छा लग रहा था यह तो साधारण सी बात थी जब भी कोई वस्तु किसी को देता है तो पूछता ही है कैसा लगा ? नहीं चाचा जी पहले मेरे लिये कभी कोई वस्तु नहीं लाये और न ही मुझसे इतना बात ही करते थे। पहले चाचा अपने बाहर वाले कमरे में ही बैठे रहते थे समाचार पत्र या पुस्तक आदि पढ़ते रहते थे परन्तु स्नेह इधर बहुत परिवर्तन आ गया था चाचा जी में वह आँगन में भी आकर बैठने लगे थे और बराण्डे में ही बैठकर भोजन करने लगे थे। मैं बोली कि अरे यह कोई विशेष बात नहीं है चाचा जी कहाँ तक बाहर बैठे रहते इसलिए अन्दर भी आकर बैठने लगे थे। हाँ मैं भी कभी इन बातों को लेकर गम्भीर नहीं हुई जब कि चाचा जी कभी कभी मेरे कमरे में भी आ जाते थे। स्नेह आगे की बात सुनों कि क्या रंग दिखाया उन चाचा महाशय ने।

होली निकट आ रही थी और गाँव जाना था तो चाचा जी होली में उपहार स्वरुप बुआ, फूफा जी व प्रशान्त प्रमिला (बुआ के बच्चे) के लिये कपड़े खरीदकर लाये थे मेरे लिये सिल्क की साड़ी लाये थे जो कि बहुत सुन्दर व महंगी थी। मुझे साड़ी दिखाते हुये बोले कि देखो विमला यह साड़ी मैं तुम्हारे लिये लाया हूँ कैसी लग रही है। यदि तुम्हें पसंद न हो तो चलकर मेरे साथ बदल लो मैं दुकानदार से बदलने की बात करके आया हूँ। मैं चाचा जी से सरलता पूर्वक बोली कि-आप नाहक परेशान हो रहे है इसकी क्या जरूरत थी कपड़े तो अभी नये रखे हैं, फिर बुआ तो कपड़े सिलवाती हैं मेरे लिये। उन चाचा ने मुझसे कहा कि अरे विमला सबके लिये ले रहा था तो तुम्हारे लिये भी लेता आया। होली के दिन इसी साड़ी को पहनना। इससे पहले स्नेह चाचा जी मेरे लिये रूमाल भी नहीं लाये थे। तुम्हें स्नेह आश्चर्य होगा कि बुआ जो उनकी निकटतम थी उनकी साड़ी भी साधारण थी। परन्तु स्नेह मेरी साड़ी तो विशेष सुन्दर थी।

तब तुम उस साड़ी को होली के दिन पहनी ? हाँ उस दिन भी पहनी और होली के पश्चात् मेरे कालेज में वार्षिक उत्सव था उसमें साँस्कृतिक कार्यक्रम भी था तो उसमें हम सब लड़कियों ने साड़ी पहनकर कालेज जाने का प्रोग्राम बनाया था। अतएव मैं भी वही चाचा वाली साड़ी पहनकर तैयार हो गई लगता है तुम्हें बेहद पसंद आ गई थी वह साड़ी तभी तो तुमने फिर पहन लिया। सुन्दर तो बहुत थी इसमें कोई शक नहीं लेकिन मेरे पास कोई दूसरी साड़ी नहीं थी क्योंकि मैं तो सलवार सूट पहना करती थी तो साड़ी खरीदी भी नहीं थी।

जब मैं तैयार होकर जाने लगी तो चाचा जी से बोली कि चाचा जी मैं कालेज जा रही हूँ मेरी सहेलियाँ आ गई हैं रात का खाना काम वाली आकर बना देगी। यदि आपको कहीं जाना हो तो किरायेदारिन चाची को चाभी देकर जाइयेगा मुझे लौटने में देर हो जायेगी। चाचा जी बोले कि विमला मैं कहीं नहीं जा रहा हूँ चलो तुम्हें कालेज तक छोड़ आऊँ और रात में तुम्हें लेने आ जाऊँगा परन्तु मैंने तुरन्त मना कर दिया कि हम सब लोग साथ साथ आ जायेंगी फिर कालेज का चौकीदार हम लोगों के साथ रहेगा लौटते समय।

रात को लौटते समय बहुत देर हो गई थी मैं बहुत असमंजस में थी कि यदि चाचा सो गये होंगे तो कैसे जगाऊँगी और उनसे चाभी लूँगी। पर घर पहुँचने पर मैंने देखा कि चाचा तो जाग रहे हैं बत्ती भी जल रही थी। बल्कि चाचा ने ही दरवाजा खोला। चाचा बहुत प्रेम से बोले कि विमला खाना मेज पर लगा है तूम्हें भूख लगी होगी पहले खा लो तब कपड़े बदलना। स्नेह सच बताऊँ उस समय भूख लग रही थी अतएव मैं हाथ मुँह धोकर खाने बैठ गई क्यों चाचा जी खाना खा चुके थे क्या ? पता नहीं स्नेह मैंने पूछा नहीं परन्तु चाचा जी खाने के मेज पर बैठे थे जब मैं खा रही थी और एकटक मुझे देख रहे थे केवल कुछ बोल नहीं रहे थे।

जानती हो स्नेह जब मैं भोजन करके अपने कमरे में कपड़े बदलने के लिये गई तो पीछे पीछे चाचा जी भी आ गये मैं तो चौंक गई उन्हें अपने कमरे में देखकर। मैं तो चुप रही परन्तु स्नेह चाचा जी मुझसे बोले कि विमला तुम्हारे इस रूप और यौवन ने तो मुझे पागल कर दिया है। मैं अपने को रोक नहीं पा रहा हूँ अपनी पत्नी के देहान्त के बाद मैं नारी का स्पर्श भी

भूल चुका था परन्तु तुम्हारे इस गोरे तन में मुझे मजबूर कर दिया है, आज मैं पूरे दिन तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था आफिस भी नहीं गया सिरदर्द का बहाना बनाकर घर में ही रहा। बस मेरी प्यारी विमला एक बार इच्छा की पूर्ति कर दो किसी को कुछ भी पता नहीं चलेगा। इन सब बातों को सुनकर तो मैं स्तब्ध रह गई कुछ भी समझ नहीं पा रही थी कि क्या करूँ। मैं आश्चर्य में भरकर से पूछी कि क्या उस प्रौढ़ व्यक्ति ने जो कि तुमसे उम्र में तीन गुना बड़ा था उसने यह सब तुमसे कहा ओफ हो तरह तरह के लोग हैं इस संसार में।

जब तक मैं कुछ बोलती कि उस नीच ने मुझे पकड़कर अपनी बाहों में कस लिया। मैं तो घबरा गई कि क्या करूँ कैसे अपने को छुड़ाऊँ परन्तु इतनी जल्दी हिम्मत हारने वाली नहीं थी। अपने को छुड़ाने का प्रयत्न करती रही इस खींचातानी में मेरी नयी साड़ी तार तार हो चुकी थी। तब मैंने क्रोधित होकर उसके बाहों को कसकर काट लिया। दर्द होने के कारण उसकी पकड़ ढीली हुई कि मैं कमरे से बाहर आ गई बराण्डे में फिर वह तेजी से लपक कर मेरी ओर झपटा और बोला कि अब तो तुम्हारे साथ जबरदस्ती करूँगा अब तक मैं प्यार से मनाता रहा तुम्हें पर अब मानने वाली नहीं हो। जानती हो स्नेह मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था क्षण भर तो मैं शान्त रही पर वह फिर मेरी ओर लपका उसी समय मेरी निगाह स्टूल पर गई और मैंने तेजी के साथ स्टूल उठाकर उस नीच के उपर फेंक दिया। मैं फेंकी तो इसलिये थी कि वह अपने को बचाने के लिये कमरे से बाहर आ जायेगा और झट से मैं कमरे में जाकर दरवाजा बंद कर लूँगी परन्तु स्नेह उस कमीने को स्टूल से सिर में चोट आ गई थी और वह सिर पकड़ कर बैठ गया। इसी बीच मैं कमरे में घुस गई और उसको बाहर धकेल कर कमरा बंद कर लिया और सब सामान जल्दी जल्दी दरवाजे के पास लगाकर बैठ गई और खूब रोई। इसी बीच वह उठकर खूब बड़बड़ाया और दरवाजा जोर जोर से पीटने लगा परन्तु थोड़ी देर बाद बड़बड़ाता हुआ शायद अपने कमरे में चला गया होगा क्योंकि मैंने फिर दरवाजा खोला ही नहीं। मुझे भय लग रहा था कि कहीं वह राक्षस न आ जाय और दरवाजा तोड़कर अन्दर घुस जाय अतएव रात भर जागती भी रही।

लेकिन तुमने ऐसी परिस्थिति में गजब का साहस दिखाया व इतनी

फुर्ती से काम किया तुम्हारी बुद्धि की दाद देती हूँ। अरे तुम्हारे आँखों में कैसे आँसू। अब तो इस घटना को बीते काफी दिन हो गया अब क्यों भावुक हो रही हो। विमला अपने आँचल से आँसू पोछते हुये बोली नहीं स्नेह आँसू तो यूँ ही आ गये सोचती हूँ कि यह रूप भी जीवन में संकट खड़ा कर देता है भला इस रूप को लेकर क्या करना। मैं उससे बोली नहीं ऐसा क्यों कहती हो जो लोग कुरुप हैं उनसे पूछो कि क्या गुजर रही है उन पर वह तो पछताते हैं कि काश वे सुन्दर होते। फिर तुमने दूसरे दिन क्या किया और वह चाचा कहाँ चला गया।

दूसरे दिन सुबह होते ही मैंने देखा कि वह नीच कामी चाचा पता नहीं कहाँ चला गया और अपना सामान भी लेता गया था। परन्तु एक आदमी को गाँव भेजी थी और बुआ के नाम एक पत्र भी दे दिया था उसको। दोपहर तक बुआ आ गई थी सब बातें बुआ को मैंने बता दिया और हास्टल में रहने का निर्णय भी कर चुकी थी। उसी दिन बुआ के साथ प्रिंसपल के घर गई और संपूर्ण बातें उनसे स्पष्ट करके छात्रावास में एक कमरा देने के लिये उनसे अनुरोध भी किया बुआ व मेरी समस्त बातों को ध्यान पूर्वक उन्होंने सुना और बोली कि मेरे कालेज में छात्रावास तो है नहीं अभी बन रहा है तब तक तुम्हें अध्यापिकाओं के रहने हेतु जो कमरे है उन्हीं में से एक दे रही हूँ कल सामान लेकर आ जाओ।

दूसरे दिन स्नेह सुबह जल्दी ही सब सामान लेकर मकान में ताला लगाकर बगल के कमरे में जो किरायेदार थे उनकी पत्नी से कहकर बुआ और मैं कालेज आ गई और कमरा साफ करके सब सामान लगा दिया और बुआ गाँव जाने लगी तो मुझसे बोली कि विमला एक सप्ताह बाद मैं फिर आऊँगी तब मकान में कोई ढंग का किरायेदार रख दूँगी अब तुम निर्भय होकर यहाँ रहो और अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो। बुआ जब जाने लगीं तब मैंने कहा कि बुआ रूपया लेती जाइये इतना ज्यादे रूपया कमरे में रखना ठीक नहीं है। जैसे ही बाक्स खोलकर डब्बा निकाली जिसमें रूपया रखती थीं डिब्बा खोलते ही मैं विस्मय से भर गई कि पाँच हजार रूपये क्या हुये कहाँ चले गये सच स्नेह मेरा .....दु:खी हो गया था और रोना ही आ रहा था। बुआ ने थोड़ी देर बाद मुझसे कहा कि क्या बात है विमला क्यों रो रही हो फिर बुआ को मैंने बताया कि बुआ मैं बैंक से पाँच हजार रूपया

निकाल कर लाई थी कमरे का दरवाजा बदलवाना था और रसोई घर में कुछ मरम्मत करवाना था। परीक्षा समाप्त होने के बाद मैं सोची थी कि यह सब काम करवाकर गाँव जाऊँगी। परन्तु बुआ रूपया गया तो गया कहाँ कुछ समझ में नहीं आ रहा था। मैं शान्त हो गई किसको चोर बनाती बिना देखे।

परन्तु स्नेह बुआ ने तुरन्त कहा कि उसी नीच की यह करामात है। ताला खोलकर रूपया निकाल लिया और साड़ी आदि वस्तुयें वह तुम्हारे रूपयों से लाया था। बुआ के कहने पर मुझे पूरा विश्वास हो गया कि चाचा जो है कुछ दिनों से मेरे कमरे में क्यों आकर बैठ जाता था वह एक बार मुझसे चाभी का गुच्छा मांगकर ले गया था अपना बाक्स खोलने के बहाने वह बोला कि मेरी चाभी पता नहीं कहाँ खो गई है तुम अपनी चाभी दे दो शायद ताला खुल जाय तो मैं चाभी वापिस लेना भूल गई उसी बीच लगता है इसने चाभी बनवा लिया और इस प्रकार से मेरा ही रूपया निकाल करके मेरे सिर पर मढ़ दिया। इतना बड़ा धूर्त कामी नीच था ऐसा व्यक्ति तो स्नेह मैंने कभी नहीं देखा था। अरे विमला यहाँ पर नीच व्यक्ति की कमी नहीं उपर से अच्छे भले दिखाई देंगे परन्तु भीतर कितना घिनौना कर्म करते हैं कि दंग रह जाओ।

आगे की बात सुनो स्नेह बुआ ने मुझे पाँच सौ रूपया अपने पर्स से निकाल कर दिया और बोली कि बेटी यह रख लो अपने पास मैं तो सोची थी कि विमला वह बुजुर्ग आदमी है और तुम्हारे पास रहेगा तो घर की रखवाली भी हो जायेगी और पास पड़ोस का व्यक्ति ऊँगली भी नहीं उठा सकेगा तुम्हारे ऊपर। पर हुआ ठीक इसके विपरीत। तुमसे उम्र में तीन गुना बड़ा उसको यह नीच हरकत करते समय तनिक भी लज्जा नहीं आई। बुआ तो वापिस गाँव चली गईं। इतना बोल कर वह शान्त हो गई ऐसा लग रहा था कि मन में कुछ सोच रही है। उसी क्षण मैं बोली कि विमला जब व्यक्ति का चारित्रिक पतन हो जाता है तब वह कुछ भी कर सकता है-बलात्कार, हत्या, चोरी आदि जघन्य कुकर्म करने में भी संकोच नहीं करता है वही उस नीच ने भी किया।

फिर तो स्नेह छात्रावास में मैं सुख से रहने लगी और बी.ए. अंतिम वर्ष की परीक्षा देकर मैं कालेज के कमरे को खाली करके सभी

सहेलियों और प्रिंसपल जी एवं सभी अध्यापिकाओं से मिलकर कालेज से अंतिम विदा लेकर सामान सहित गाँव आ गई। बुआ भी आई थी। जब गाँव पहुँची तब दो दिन बाद बुआ ने बताया कि विमला तुमसे वगैर पूछे एक काम मैंने कर लिया। मैं भी जिज्ञासा वस पूछने लगी कि क्या काम बुआ। बुआ ने कहा कि तुम्हारा ब्याह तय कर दिया है मैंने अगले माह 10 जून को है। कैसे लोग हैं बुआ जो कि मुझे बिना देखे ही तय कर लिये। विमला किशनगंज के रमाशंकर वकील जो कि दूर के मेरे मामा लगते हैं उन्हीं का लड़का है इलाहाबाद में इंजिनियरिंग कालेज में दूसरे वर्ष में पढ़ रहा है। उन लोगों ने तुम्हें देखा है। विमला अम्मा के मृत्यु के समय यह लोग आये थे तभी देखे थे। मैं बोली कि विमला वह बहुत ही भाग्यवान होगा जो तुम्हें ब्याहेगा। इतनी रूपवान गुणवान पत्नी किस्मत वालों को मिलती है विमला दुःखी होकर बोली क्यों स्नेह इतना व्यंग बाण छोड़ रही हो मेरा भाग्य तो इतना रूपवान व गुणवान नहीं है वह तो विपरीत दिशा में ही चलता है। छोड़ो इन बातों को अब आगे की कहानी सुनो।

मेरा विवाह रमाशंकर वकील के पुत्र श्री प्रकाश पुंज जी से जो कि उस समय इलाहाबाद के इंजिनियरिंग कालेज में द्वितीय वर्ष के छात्र थे के साथ धूम धाम से सम्पन्न हो गया। मैं विदा होकर ससुराल आ गई वहाँ पर मेरा भव्य स्वागत हुआ इतना स्वागत तो मेरा अब तक कभी भी नहीं हुआ था। मुझे स्नेह समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसी क्या खूबी मेरे अन्दर है जिससे सभी लोग मुझे पूज रहे हैं। इसका रहस्य तो धीरे धीरे पता चला।

विमला तब तुम अपनी आगे की शिक्षा पूरी कर पाई कि नहीं। वह बोली कि नहीं स्नेह शिक्षा को विराम लग गया था। दो वर्ष तक तो बहुत ही आनन्द से मेरा वैवाहिक जीवन चला। एक दिन मेरे ससुर जी मुझसे बोले कि बहू यह बैंक के कागजात हैं संभाल कर रख लो आज तुम्हारे फूफा जी किसी मुकदमें के सिलसिले में कचहरी आये थे तो मुझे दे गये है। लगभग छः माह हुये होंगे कि सासु जी बोली कि बहू पुनीता (मेरी ननद) को कल लड़के वाले देखने आ रहे हैं तो बैंक जाकर जरा अपना सेट जो तुम अपने विवाह में पहन कर आयी थी निकाल लो कल पुनीता को पहना देना। वैसे तो बहू मेरे पास भी है गले का हर है परन्तु वह पुराने डिजाइन का है इसलिए पहनाना ठीक नहीं होगा। एक आदर्श बहू की भांति मैं बोली अच्छा माँ जी

आज ही बैंक जाकर निकाल लाती हूँ। अब सुनो जब पुनीता की शादी तय हो गई तब ससुर जी ने कहा कि बेटी विमला तुम एक लाख रूपया मुझे उधार दे दो पुनीता की शादी में कम पड़ रहा है मैं बाद में दे दूँगा। मैं बीच में बोल उठी तो क्या तुमने एक लाख दिया वह बोली हाँ कैसे नहीं देती, निकालकर दिया। मैंने अपने पति प्रकाश से यह सब बातें बताई तो वह बोले कि विमला जब मेरी नियुक्ति हो जायेगी तो इतना रूपया तो तुम्हें नौकरी लगते ही दे दूँगा। तुम एक सेट की बात कर रही हो विमला तुम्हें हर माह एक सेट उपहार स्वरुप दिया करूँगा। प्रकाश बोले कि अब तुम प्रसन्न हो जावो बस स्नेह इन्हीं मीठी बातों को सुनकर ही मेरा मन प्रफुल्लित हो जाता था विवाह के चार वर्ष बाद तक मेरी गृहस्थी बहुत ही सुखद रूप से चल रही थी। इसी बीच पुत्र को जन्म देकर माँ भी बन गई थी। तब तो विमला तुम बहुत ही प्रसन्न होगी। हाँ थी तो प्रसन्न। मेरे पुत्र का जन्मोत्सव मनाना था तो ससुर जी बोले के बहूरानी पचास हजार का चेक काटकर दे दो आज बैंक से रूपया निकाल लूँ पोते के जन्म के उपलक्ष्य में पूरे शहर के लोगों को और विरादरी वालों को भोज देना है और आज ही तुम्हारे बुआ और फूफा जी को भी सपरिवार आने का नियंत्रण पत्र भेजा हूँ। स्नेह मुझे यह बात बहुत ही अनुचित लगी कि जब भी कोई अवसर आता है खर्च करने के लिये तो सबको मेरा ही एकाउण्ट दिखाई पड़ता है। इतना ही नहीं मेरी सास बोली कि बहू पोते के जन्म पर दामाद जी का स्कूटर देना होगा पुनीता को कंगन पहनाना होगा तो बेटी सोच समझकर रूपया निकालना ताकि सब काम हो जाय।

स्नेह मुझे ऐसा लगने लगा कि सबको मेरे रूपये से प्रेम है मुझसे प्रेम किसी को नहीं। मैंने पूछा कि क्या तुम्हारे पति कुछ भी नहीं कमाते थे ? अरे स्नेह यही तो मुझे भी आश्चर्य होता था कि प्रकाश क्यों नहीं बोलते। जब प्रकाश की नियुक्ति लखनऊ हो गई तो मैं बोली प्रकाश मुझे एम.ए. करना है अब तो बेटा भी एक वर्ष का हो चुका है और रेगूलर न सही प्राइवेट ही कर लूँ तभी अच्छा होगा। किसी प्रकार से एम.ए. भी मैंने प्रथम श्रेणी में पास कर लिया और इधर पंकज मेरे बेटे का जन्मदिन भी आ रहा था अतएव प्रकाश मुझसे बोले कि विमला तुम आज तीस हजार रूपया बैंक से निकाल लेना क्योंकि पंकज का जन्मदिन और तुम्हारे पास होने

की जबरदस्त पार्टी देनी है, दो दो खुशियों की इकठ्ठे दे देंगे।

जानती हो स्नेह मैं भी बहुत प्रसन्न थी इसलिए बैंक जाकर तीस हजार रूपया निकाल लाई शाम को जब प्रकाश आये तो उन्हें थमा दिया और बोली कि जी खोल कर दावत दो। खूब जोर शोर से पार्टी हुई और काफी लोग आये थे।

कुछ दिनों के बाद बुआ के लड़के प्रसून की शादी तय हो गई थी और एक दिन प्रसून ने आकर निमंत्रण पत्र और दो पत्र मुझे दे गया एक मेरे श्वसुर जी के नाम का और दूसरा प्रकाश के नाम का। बुआ ने मुझे तो विवाह की तारीख से पन्द्रह दिन पहले आने को लिखी थी क्योंकि सारी तैयारी मुझी को सौंपी गई थी करने के लिये। एक दिन की बात है कि प्रकाश और मैं बैठ कर चाय पी रहे थे उसी समय प्रकाश ने मुझसे कहा कि विमला प्रसून के विवाह में जो देना हो वह तुम खरीद लो मैं भी बोली कि प्रसून की बहू को एक सेट खरीदकर दे दूँगी मुँह दिखाई क्योंकि बुआ और फुफा जी मेरे लिये बहुत कुछ किया जिसको कि मैं कभी भुला नहीं सकती हूँ मैं आज जो कुछ भी हूँ वह उन्हीं लोगों की वजह से हूँ। वह दोनों लोग नेक व सज्जन हैं। मेरा ध्यान अपनी बेटी से बढ़कर रखा। मेरा विवाह भी परन्तु प्रकाश बुआ, फूफा ने मेरे एकाउण्ट में से एक पाई भी नहीं निकाला, चाहते तो मेरा रूपया ले सकते थे। पता नहीं मेरे पति प्रकाश को यह बात क्यों बुरी लगी क्योंकि वह झट से बोले तो यहाँ कौन तुम्हारा रूपया निकाल रहा है अरे विमला तुम्हारा जितना भी रूपया निकला है वह मैं सब तुम्हें दे दूँगा थोड़े दिन और रूक जावो मैंने कहा कि शायद प्रकाश को लगा होगा कि तुम अप्रत्यक्ष रूप से उन्हीं के उपर व्यंग्य कस रही हो। वह गम्भीर होती हुयी बोली कि मैंने प्रकाश के उपर कतई व्यंग नहीं बोली थी फिर भी यदि प्रकाश को ऐसा लग रहा था तो मुझसे स्पष्ट कर लेते बजाए गाँठ बांधकर अपने हृदय में रखने के।

थोड़े दिन बाद बुआ के यहाँ विवाह में जाना था और बुआ का छोटा लड़का वैभव मुझे लेने आया था तो उसी दिन प्रकाश बोले कि विमला एक पुरानी फियट कार है जो कि सत्तर हजार में दे रहा अतएव यदि तुम अपने एकाउण्ट में से रूपया निकाल कर दे दो तो खरीद लूँ और विवाह में कार से सब लोग चले चलेंगे और प्रसून की शादी में बुआ जी और

फुफा जी को आराम रहेगा कार से। बात तो प्रकाश ने ठीक ही कही थी परन्तु स्नेह मैंने यह कह दिया कि प्रकाश अभी विवाह में भी खर्चे के लिये रूपया निकाला है अब कार बाद में खरीद लेना अभी किसी की मांग कर आ जाना तुम बाबू जी व माँ जी।

पता नहीं क्यों मेरी यह बात प्रकाश को बुरी लगी और स्नेह अब मेरी कहानी के अंतिम पड़ाव को जरा ध्यान से सुनना क्योंकि तुम्हें एक जज की भांति फैसला करना होगा कि क्या मुझसे कोई बहुत बड़ी गलती हो गई थी या फिर प्रकाश ने इस बात का बहाना लेकर अपने मन की इच्छा पूरी कर लिया। अपने जीवन की कहानी बताती चलो अवश्य फैसला करूँगी। तो फिर आगे की बात सुनो स्नेह मैं तो, पंकज को लेकर वैभव के साथ चली गई प्रसून के विवाह में और प्रकाश से जाते समय कहते गई कि प्रकाश बाबू जी व माँ जी को भी साथ लेकर आना सुबह तड़के निकल लेना ताकि गर्मी का दिन है सुबह ही सुबह पहुँच जाओगे तो ठीक रहेगा। उस समय स्नेह प्रकाश कुछ नहीं बोले और चुप रहे और प्रसून के विवाह में आये भी नहीं। प्रकाश के न आने का बुरा तो मुझे भी लग रहा था क्योंकि बुआ फूफा बार बार कह रहे थे कि क्या बात है क्यों नहीं आये। मैंने कह दिया कि हो सकता है कि बाबू जी की तबियत ठीक न हो गर्मी का मौसम है इसलिये ही नहीं आ पाये होंगे और कोई बात नहीं होगी।

एक सप्ताह बाद बुआ का लड़का किसी कार्य से लखनऊ जा रहा था तो मैंने ही कह दिया था कि वैभव प्रकाश से कह देना अगले रविवार को मैं आ जाऊँगी यदि आना चाहे तो शनिवार को आ जायेंगे रविवार को हम सब लोग वापिस चले चलेंगे परन्तु यह क्या वैभव जब लौटा तो एक बड़ा लिफाफा व प्रकाश का पत्र मुझे थमा दिया बोला कि जीजा जी ने कहा है तुम्हें देने के लिये और कल कोई आदमी भेजेंगे। तब यह लिफाफा कागज सहित वापिस भेज देना। मैं पूछ बैठी विमला पत्र में प्रकाश ने क्या लिखा था, क्यों नहीं विवाह में आ पाये ? हाँ तो सुनो तो पत्र में केवल इतना ही लिखा था कि तलाक के कागजात हैं इस पर दस्तख़त कर देना कल एक व्यक्ति भेजूँगा उसी को वापिस कर देना। मैं तो स्नेह तलाक के कागजात को देखकर स्तब्ध रह गई परन्तु बुआ व फूफा जी ने कहा कि लखनऊ चलो अब प्रकाश के माता पिता से बात करेंगे क्यों प्रकाश तलाक

लेना चाहते हैं। मुझसे बार बार बुआ पूछ रही थी कि विमला क्या तुमसे कोई लड़ाई झगड़ा हुआ था कहीं विवाह में इतने देने के कारण तो नहीं नाराज हो गये। मैंने बुआ से पुनीता को सेट पहनाने से लेकर प्रसून के विवाह में खर्चे तक के रूपयों की पूरी बात स्पष्ट रूप से बता दिया यह भी बता दिया कि प्रकाश कार खरीदना चाहते थे उसके लिये भी रूपया निकालने को कह रहे थे मैंने मना कर दिया कि कुछ दिनों बाद कार खरीद लेना। बस बुआ इतनी बात हुई है।

परन्तु बुआ फूफा व मैं लखनऊ आये और घर गये हम लोग। स्नेह जो घर कल तक मेरा था जिसमें मैं अधिकार के साथ रहती थी वही घर आज पराया लग रहा था। किसी ने नहीं स्वागत किया न ही कोई प्रसन्न हुआ। मेरे आगमन पर परन्तु स्नेह मैं ही वेशर्म होकर प्रकाश से पूछी कि क्या मजाक कर रहे हो कैसा तलाक किस बात का तलाक ले रहे हो मुझसे। परन्तु प्रकाश व उनकी माता सभी लोग जैसे जिद पकड़ लिये थे और तो और उल्टे मुझे ही दोषी कहा जा रहा था चरित्रहीन की उपाधि से विभूषित किया जा रहा था। प्रकाश मेरे साथ एक पल भी नहीं रहना चाहते थे। मैं तो समझ नहीं पा रही थी कि कार खरीदने का रूपया न निकालकर देना कौन सी चरित्रहीनता का कार्य था। परन्तु हार मानकर मैंने भी हठ ठान लिया था कि जब दस्तख़त करूँगी वरना दस्तख़त नहीं करूँगी। परन्तु स्नेह किसी प्रकार से बेटा तो मैंने ले लिया और प्रकाश को तलाक दे दिया बदले में मैंने कुछ भी प्रकाश से खर्चा लेना अपना अपमान समझी क्योंकि मैं अपने बेटे का और स्वयं का खर्चा उठा सकती थी जिस पुरुष से कोई संबंध नहीं उससे आजीविका के लिये भीख मांगना भी उचित नहीं था। परन्तु स्नेह बेटा पाकर मैं इतनी प्रसन्न थी कि क्या बताऊँ मेरा बेटा मेरे जीने का सहारा था। बुआ फूफा ने कहा कि चलो बेटी मेरे पास रहो अब कहाँ जाओगी परन्तु मैंने कह दिया कि आप लोग चिन्ता न करें मैं अब स्वयं अपने पैरों पर खड़ी होकर दिखाऊँगी कि नारी अकेले भी रह सकती है उसको पुरुष के सहारे की आवश्यकता नहीं है। मैंने स्नेह एल.टी. किया और फिर बी.एड. किया और अपने बेटे का लालन पालन भी करती रही और आज जो कुछ हूँ वह तुम्हारे सामने हूँ। उसी बीच किसी ने खबर दिया कि प्रकाश दूसरा विवाह कर रहे हैं उसके श्वसुर ने उसे दहेज में कार दिया है तुम्हें बुलाया है विवाह में, भला स्नेह मैं क्यों जाऊँ प्रकाश के विवाह में यदि वह स्वयं भी

बुलाने तो भी न जाती कई लोगों ने कहा कि विमला दूसरा विवाह कर लो बच्चा छोटा है। किसी ने मुझसे कहा कि यह जिन्दगी इतनी लम्बी है कैसे कहाँ कहाँ भटकोगी बच्चे को लेकर अब तो प्रकाश ने भी विवाह कर लिया है तुम भी कर लो। विवाह परन्तु स्नेह अब मुझे पुरुष जाति से घृणा हो गई थी सभी पुरुष मुझे बुआ के ससुर चाचा व प्रकाश ही लगते थे। मैंने दूसरा विवाह नहीं किया और आज तक अकेली ही सब जिम्मेदारी निभा रही हूँ कहीं भी मुझे प्रकाश की कमी नहीं लगी। आज मेरा बेटा पंकज डॉक्टर बन गया है और फैजाबाद के जिला चिकित्सालय में सर्जन के पद पर नियुक्त है और मेरी बहू प्रवीना भी डॉक्टर है वह फैजाबाद के महिला चिकित्सालय में नियुक्त है। दोनों इसी दीपावली की छुट्‌टी में मेरे पास आ रहे हैं। इसलिये मैं कुछ आवश्यक सामान लेने बाजार गई थी वरना इस विमला को कोई विशेष जरूरत नहीं रहती है। अच्छा ही हुआ बाजार जाने का विशेष लाभ मुझे हुआ कि स्नेह तुम मिल गई। मैंने देखा कि विमला के चेहरे पर एक संतुष्टि की भावना झलक रही थी कि अपने जीवन की कहानी मुझे सुनाकर भारमुक्त हो गई थी।

मैंने विमला से कहा कि आज तुमने यह दिखा दिया कि नारी किसी पुरुष से कम नहीं है वह वगैर पुरुष के नौकरी कर सकती है बच्चे को पाल पोसकर एक अच्छा इन्सान बना सकती है और बच्चे को आत्म निर्भर बना सकती है। मेरा फैसला तो यही है कि विमला कि जीवन के दौड़ में तुम जीत गई। अच्छा विमला अब चलो मुझे घर छोड़ दो फिर कभी आऊँगी।

•